A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 11 मई, 2025

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित
वर्ष 10 अंक 211, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

एक छोटा सा भी विचार तुम्हारे भीतर पैदा होता है, तो सारा अस्तित्व उसे सुनता है।- ओशो.

फोटो : पंकज शर्मा

subahsaverenews@gmailĐcom
facebookĐcom/subahsaverenews
wwwĐsubahsavereĐnews
twitterĐcom/subahsaverenews

सुप्रभात

माँ !
तुम्?हारे ऋण का भार
बहुत अधिक है
सहस्?त्रों जन्?म लेकर भी
मुमकिन नही मुक्?त हो पाना
तुम्?हारे गर्भ में मेरी यात्रा
सभी युगों के कालखण्?ड से अधिक है
तुम्?हारी प्रसव पीड़ा
सप्?त-सागरों के आयतन से भारी है।

तुम्?हारी ममता में
सकल ब्रह्मांड से अधिक गुरूत्?व है।
मेरे रक्?त की हर बूंद
मेरे हृदय का हर स्?पन्?दन
तुम्?हारे उरोज अमृत का प्रतिफल है
तुम जीवन का सृजन हो माँ
जब तक ये सृष्टि है
और सृष्टि में जीवन है
देव, दानव, यक्ष
और मैं साधारण मनुष्?य
सभी तुम्?हारे ऋणी? रहेंगे
किसी में भी सामर्थ्?य नही है
तुम्?हारे ऋण से मुक्?त होने की।

– डॉ. जीवन एस. रजक

तीन घंटे में ही पाकिस्तान ने तोड़ा सीजफायर

● जम्मू-कश्मीर में फायरिंग, शेलिंग, ड्रोन अटैक, उमर बोले- श्रीनगर में धमाके हो रहे ● दोनों देशों के बीच सीजफायर का ऐलान, 3 घंटे पहले विदेश सचिव ने यह जानकारी दी थी ●

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और पाकिस्तान के बीच शनिवार शाम 5 बजे सीजफायर लागू हो गया था। इसके 3 घंटे बाद ही पाकिस्तान ने सीजफायर का उल्लंघन कर दिया। रात 8 बजे से पाकिस्तान की तरफ से जम्मू-कश्मीर के अखनूर, पुंछ, नौशेरा, श्रीनगर, आरएसपुरा, सांबा, उधमपुर में फायरिंग की जा रही थी। राजौरी में शेलिंग (तोप और मोर्टार) की गई। उधमपुर में ड्रोन से हमला हुआ। जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने कहा- ये कैसा सीजफायर है। श्रीनगर में धमाकों की आवाज सुनाई दे रही है।

इसके पहले भारत और पाकिस्तान के बीच सीजफायर हो गया था। विक्रम मिसरी ने कहा कि दोनों देश सीजफायर को राजी हैं। जमीन, आकाश और युद्ध में 5 बजे से युद्धविराम हो गया। 12 तारीख को दोपहर 12 बजे डीजीएमओ बातचीत करेंगे। इससे पहले, भारत और पाकिस्तान एक दूसरे पर सैन्य कार्रवाई कर रहे हैं। विदेश और रक्षा मंत्रालय ने शनिवार सुबह 10.30 बजे प्रेस कॉन्फ्रेंस करके मौजूदा हालात की जानकारी दी। थोड़ी देर में फिर से प्रेस कॉन्फ्रेंस होगी। आज सुबह कर्नल सोफिया कुरैशी ने कहा कि पाकिस्तान ने हाईस्पीड मिसाइल से जम्मू-कश्मीर के उधमपुर, पंजाब के पठानकोट, आदमपुर और गुजरात के भुज एयरबेस पर हमला किया,

जिसमें हमें नुकसान पहुंचा है। पाकिस्तान ने अस्पताल और स्कूल को भी निशाना बनाने की कोशिश की, जिसे भारत ने नाकाम कर दिया। ब्रह्मोस फैसिलिटी तबाह करने का पाकिस्तानी दावा गलत है।

भारतीय एस-400 डिफेंस सिस्टम भी पूरी तरह सुरक्षित है। सूत्रों के अनुसार, दोनों देशों के बीच गोलीबारी और सैन्य कार्रवाई को रोकने के लिए सीधी बातचीत हुई। आज दोपहर पाकिस्तान के डायरेक्टर जनरल ऑफ मिलिट्री ऑपरेशन्स ने बातचीत की पहल की, जिसके बाद चर्चा हुई और सीजफायर पर सहमति बनी।

सूत्रों ने यह भी स्पष्ट किया कि किसी अन्य मुद्दे पर या किसी अन्य स्थान पर बातचीत का कोई निर्णय नहीं लिया गया है। यह कदम दोनों देशों के बीच तनाव को कम करने की दिशा में महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

● **ट्रंप ने किया दावा, पाकिस्तान ने भी की पुष्टि –** इससे पहले अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है मुझे यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि भारत और पाकिस्तान पूर्ण और तत्काल

संघर्षविराम पर सहमत हो गए हैं। भारत और पाकिस्तान ने इस समझौते की पुष्टि भी की है। भारतीय विदेश सचिव विक्रम मिस्री ने कहा कि संघर्षविराम समझौता आज शाम 5 बजे से लागू हो गया है। पाकिस्तान के उपप्रधानमंत्री और विदेश मंत्री इशाक डार ने भी समझौते की पुष्टि की है। इससे पहले अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने दोनों देशों से बात की थी इसके बाद से माना जा रहा था कि दोनों देशों में शायद तनाव कम हो। ट्रंप ने सोशल मीडिया हैंडल पर लिखा, संयुक्त राज्य अमेरिका की मध्यस्थता में एक लंबी रात तक चली बातचीत के बाद, मुझे यह घोषणा करते हुए खुशी हो रही है कि भारत और पाकिस्तान पूर्ण और तत्काल युद्धविराम पर सहमत हो गए हैं। दोनों देशों को सामान्य बुद्धि और महान बुद्धिमत्ता का उपयोग करने के लिए बधाई। इस मामले पर आपका ध्यान देने के लिए धन्यवाद।

नया कीर्तिमान स्थापित करेगी तापी बेसिन मेगा रिचार्ज परियोजना : मुख्यमंत्री

मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र सरकार के बीच एमओयू

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि तापी बेसिन मेगा रिचार्ज परियोजना मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र के विकास का नया आयाम स्थापित करेगी। उन्होंने कहा कि इस परियोजना के लिए मध्यप्रदेश और महाराष्ट्र के सरकार के बीच आज एमओयू किया जा रहा है। इस अवसर पर महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री देवेन्द्र फडनवीस विशेष रूप से उपस्थित रहेंगे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मीडिया को जारी संदेश में कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में मध्यप्रदेश अपने सभी पड़ोसी राज्यों के साथ जल बंटवारे को लेकर आपस में जनता के हित में पीने के पानी और सिंचाई सुविधा के विकास लिए आगे बढ़ रहा है। आज ही महाराष्ट्र सरकार साथ एमओयू होने वाला है। आपसी सहयोग से हम जल भंडारण का नया प्रोजेक्ट बना रहे हैं जो विश्व का एक अनूठा प्रोजेक्ट होगा। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री का स्वागत और अभिनंदन है। दोनों राज्यों ने मिलकर यह योजना बनाई है। हम आपसी सहयोग से इस दिशा में आगे बढ़ रहे हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी ने जिस प्रकार से नदी जोड़ो का महा अभियान प्रारंभ किया है, इसमें सहभागिता करते हुए मध्यप्रदेश अपने पड़ोस के सभी राज्यों से तालमेल कर रहा है। मध्यप्रदेश में केन-बेतवा राष्टीय नदी जोडो परियोजना पर हमने हाल ही में काम प्रारंभ किया है। इससे पूरे बुंदेलखंड क्षेत्र के लोगों का जीवन बदलेगा। इसी प्रकार राजस्थान सरकार के साथ हमारा पार्वती-कालीसिंध-चंबल राष्टीय नदी जोड़ो परियोजना का काम भी प्रारंभ हुआ है। इससे मालवा और चंबल के कई क्षेत्रों को लाभ मिलेगा।

इसी क्रम में तापी बेसिन मेगा रिचार्ज परियोजना की दिशा में हम आगे बढ़ रहे हैं। इससे प्रदेश के निमाड़ क्षेत्र के जिलों को लाभ मिलेगा, जिसमें खंडवा जिले की खालवा तहसील एवं बुरहानपुर जिले में नेपानगर, खकनार और बुरहानपुर तहसीलों के अलावा बड़वानी जिले तक के क्षेत्र में हम इस परियोजना का लाभ ग्रामीणों को देंगे।

दो बाइक टकराई, 5 की मौत

छिंदवाड़ा (नप्र)। छिंदवाड़ा में देर रात करीब 12 अमरवाड़ा के चौरई रोड स्थित चौरसिया पेट्रोल पंप के पास दो बाइक की टक्कर हो गई। हादसे में दो युवकों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि तीन गंभीर रूप से घायल हो गए। तीनों को अस्पताल लाया गया जहां इन तीनों ने भी दम तोड़ दिया।

हादसे के दौरान बाइक सवार दूर जा गिरे। मृतकों में दो युवक एक ही परिवार के हैं। मृतकों की पहचान सुखराम यादव (21) और आयुष यादव (19) निवासी अमरवाड़ा, शहजाद खान (19), विक्रम उईके (18) और अविनाश उईके (18) शामिल हैं। विक्रम और अविनाश लिंगपानी के रहने वाले थे।

परिजन ने लगाया लापरवाही का आरोप

हादसे की जानकारी मिलते ही युवकों के परिजन और उनके परिचित अमरवाड़ा अस्पताल पहुंच गए। एएसपी आयुष गुप्ता ने बताया कि परिजन ने इलाज में लापरवाही का आरोप लगाते हुए अस्पताल में जमकर हंगामा किया। उनका कहना था कि डॉक्टरों द्वारा समय पर इलाज नहीं मिलने के कारण घायल युवकों की जान नहीं बचाई जा सकी।

सूचना मिलते ही अमरवाड़ा एसडीएम हेमकरण धुर्वे, एसडीओपी रविंद्र मिश्रा, तहसीलदार राजेश मरावी और टीआई राजेंद्र धुर्वे अस्पताल पहुंचे और परिजन को समझाइश दी। तब जाकर लोग शांत हुए।

तनाव के बीच भारत सरकार का बड़ा फैसला

आतंकी हमला हुआ तो उसे माना जाएगा युद्ध

नई दिल्ली (एजेंसी)। केंद्र सरकार ने कहा, अगर भविष्य में भारत पर कोई भी आतंकी हमला होता है तो इसे एक्ट ऑफ वॉर (युद्ध) माना जाएगा। हमले का जवाब भी वैसे ही दिया जाएगा। न्यूज एजेंसी ने सरकार के सूत्रों के हवाले से यह खबर दी। सरकार के सूत्रों के अनुसार, अब अगर भारत के खिलाफ आतंकी हमला हुआ तो उसे युद्ध माना जाएगा और उसी प्रकार जवाब भी दिया जाएगा। सरकार के फैसले ने साफ कर दिया है कि भारत को अब पाकिस्तान द्वारा किए जा रहे आतंकी हमले बिल्कुल भी बर्दाश्त नहीं होंगे। यदि पाकिस्तान अब भी आतंकी हमलों से बाज नहीं आता है तो फिर भारत उसे युद्ध मानेगा और सख्ती से निपटेगा। 22 अप्रैल को पाकिस्तान स्थित लश्कर ए तैयबा के मुखौटा आतंकी संगठन टीआरएफ ने पहलगाम में

आतंकी हमले को अंजाम दिया था। इसमें 26 लोगों की जान चली गई थी, जबकि कई अन्य घायल हो गए थे। इसमें भारतीय पर्यटकों से उनका धर्म पूछकर गोली मारी गई थी, जिससे देशभर में पाकिस्तान के खिलाफ काफी गुस्सा था। भारत ने पाकिस्तान के आतंकी हमले का जवाब देते हुए ऑपरेशन सिंदूर लॉन्च किया और देर रात पाक और पीओके में नौ आतंकी ठिकानों पर एयर स्ट्राइक करते हुए 100 से ज्यादा आतंकियों को ढेर कर दिया था। इसमें जैश-ए-मोहम्मद चीफ मसूद अजहर के परिवार के दस सदस्य भी मारे गए। इसके अलावा कई अन्य बड़े आतंकियों को भी मार गिराया गया। भारत की कार्रवाई से बौखलाए पाकिस्तान ने गुरुवार की रात जम्मू समेत कई शहरों में 400 तुर्की ड्रोन से हमला बोल दिया था।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 25 °c

न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 11 मई 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने वन विहार राष्ट्रीय उद्यान के जल क्षेत्र में छोड़े कछुए

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने गत दिवस भोपाल स्थित वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में वन्य जीवों के संरक्षण एवं पर्यावरण संतुलन बनाए रखने के लिए किए जा रहे प्रयासों का निरीक्षण किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने इस दौरान वन विहार राष्ट्रीय उद्यान से सटे भोज ताल के जल क्षेत्र में कुछ नन्हे कछुओं को उनके प्राकृतिक आवास में छोड़ा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कछुओं की प्रजातियों के संबंध में जानकारी प्राप्त की। उन्होंने वन विहार के अन्य प्राणियों के रखरखाव और पर्यटन विकास के लिए किए गए प्रयासों के बारे में भी जानकारी प्राप्त की। इस अवसर पर वरिष्ठ अधिकारी एवं वन विहार राष्ट्रीय उद्यान में वन्य प्राणियों के रखरखाव और देखभाल में संलग्न स्टॉफ उपस्थित था। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने बैटरी चलित वाहन से वन विहार क्षेत्र का निरीक्षण भी किया।

सामूहिक विवाह सम्मेलनों से वित्तीय मितव्ययता को मिल रहा प्रोत्साहन : सीएम

लाड़ली लक्ष्मी और कन्यादान जैसी योजनाएं कुशलतापूर्वक हो रहीं संचालित : केंद्रीय कृषि मंत्री चौहान

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश विकसित राज्य बनने की ओर अग्रसर है। केंद्रीय कृषि मंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के मुख्यमंत्री काल में मध्यप्रदेश बिजली आपूर्ति और सिंचाई व्यवस्था में आत्मनिर्भर बना। प्रदेश के गांव-गांव तक सड़कों का जाल बिछा है। यह सिर्फ सामूहिक विवाह सम्मेलन का प्रसंग नहीं है, आज यहां बुधनी विधानसभा में विकास कार्यों को गति देने के लिए 170.42 करोड़ रुपए लागत के विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण और भूमि-पूजन भी हुआ है। यह इस क्षेत्र के विकास की ओर बढ़ाया गया एक और नया कदम है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव शनिवार को सीहोर जिले की बुधनी विधानसभा क्षेत्र के भेरूंदा स्थित ग्राम पिपलानी में मुख्यमंत्री कन्यादान योजना में सामूहिक विवाह सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। सम्मेलन में क्षेत्रीय जनजातीय (गोंड) समाज के 572 जोड़े परिणय सूत्र में बंधे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि पहले बेटियों का विवाह कठिन प्रसंग होता था। बेटी की शादी के लिए गरीबों और किसानों को अपनी जमीन तक बेचनी पड़ती थी, लेकिन केंद्रीय मंत्री श्री

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सीहोर जिले के ग्राम पिपलानी में मुख्यमंत्री कन्यादान योजना में सामूहिक विवाह समारोह का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ किया।

शिवराज सिंह चौहान ने सबसे पहले चंदा जुटाकर गरीब कन्याओं का विवाह कराने की शुरुआत की। बाद में शासन स्तर पर योजना तैयार की गई और सामूहिक विवाह सम्मेलनों की शुरुआत हुई। आज समाज का हर वर्ग इस योजना के जरिए न केवल फिजूलखर्ची जैसी कुरीतियों से बच रहा है, वरन् सामूहिक विवाह सम्मेलनों से समाज में वित्तीय मितव्ययता की प्रवृत्ति को भी प्रोत्साहन मिल रहा है। सनातन समाज में विवाह केवल दूल्हा-दुल्हन का रिश्ता नहीं है, यह दो परिवारों के लिए भी एक नए संबंध की शुरुआत है।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि बुधनी में फोरलेन, मेडिकल कॉलेज और गारमेंट कारखाने स्थित हैं। सलकनपुर में देवीलोक का विकास कार्य भी प्रगति पर है। शुक्रवार को ही दमोह के बांदकपुर में भी देवश्री जागेश्वर महादेव लोक का भूमि-पूजन किया गया है। हमारी सरकार केंद्रीय मंत्री और पूर्व मुख्यमंत्री श्री चौहान द्वारा प्रारंभ सभी कार्यों को आगे बढ़ा रही है। बुधनी क्षेत्र के विकास में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। उन्होंने कहा कि किसानों की आय बढ़ाने के लिए राज्य सरकार ने 2600 रुपए प्रति क्विंटल गेहूं खरीदा है। पशुपालन को बढ़ावा देने के लिए हमारी सरकार ने डॉ. भीमराव अंबेडकर कामधेनु योजना शुरू की है, जिसमें किसानों को 25 से 33 प्रतिशत अनुदान भी मिल रहा है। प्रदेश में दूध उत्पादन 9 प्रतिशत से बढ़ाकर 20 प्रतिशत तक करने का लक्ष्य रखा गया है। सरकार ने हर ब्लॉक में एक गांव को आदर्श वृंदावन ग्राम बनाने का संकल्प लिया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारत एक शक्ति संपन्न देश है, जो किसी भी दुश्मन को मुंहतोड़ जवाब देने में सक्षम है। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने एक बार नहीं तीन-तीन बार सर्जिकल स्ट्राइक की हैं। जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में आतंकियों ने धर्म पूछकर बहनों का सुहाग उजाड़ा है। अब ऑपरेशन सिंदूर से आतंकी और उनके ठिकानें ध्वस्त किए जा रहे हैं।

पीएम मोदी दिल्ली तो सीएम नीतिश बांग्लादेश बॉर्डर पर संभाले रहे मोर्चा

- तैयार हो रही थी पाकिस्तान की बर्बादी की स्क्रिप्ट, पूर्णिया में की उच्च स्तरीय बैठक

पूर्णिया (एजेंसी)। भारत-पाकिस्तान में तनाव खत्म हो गया है। ऑपरेशन सिंदूर रुक गया है। पीएम मोदी लगातार दिल्ली में बैठक कर रहे थे वहीं, नीतिश कुमार ने बांग्लादेश और नेपाल के बॉर्डर पर सीमांचल के पूर्णिया में बड़ी बैठक बुलाई। इसमें बिहार के पुलिस-

प्रशासन के साथ रेलवे के अफसर और सेना के अधिकारी भी मौजूद रहे। भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव को देखते हुए बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने पूर्णिया में एक बड़ी मीटिंग की। इस मीटिंग में सीमावर्ती जिलों की सुरक्षा व्यवस्था पर बात की गई। नीतिश कुमार की इस मीटिंग में सेना के अफसर, पुलिस अधिकारी और रेलवे के अधिकारी भी इसमें शामिल रहे। मीटिंग में सुरक्षा को लेकर कई अहम फैसले लिए गए। पूर्णिया कलेक्ट्रेट में हाई लेवल मीटिंग हुई। इस मीटिंग में सीमावर्ती जिलों के पुलिस और प्रशासनिक अधिकारी शामिल रहे।

घर के बाहर गाड़ी खड़ी करने पर अब देना होगा शुल्क

योगी सरकार का बड़ा फैसला, 17 शहरों में लागू हुआ नियम

लखनऊ (एजेंसी)। उत्तर प्रदेश के 17 जिलों में अब घर के बाहर गाड़ी खड़ी करने पर शुल्क लगेगा। योगी सरकार ने यह फैसला लिया है। यह नियम उन लोगों पर लागू होगा, जिनके घर में पार्किंग की जगह नहीं है और वे अपनी गाड़ी बाहर पार्क करते हैं। नगर निगम प्रशासन रात में गाड़ियों

के लिए पार्किंग की जगह बनाएगा। भीड़ वाले शहरों में त्योहारों के दौरान फ्लाईओवर के नीचे पार्किंग की सुविधा भी दी जाएगी। योगी सरकार की कैबिनेट ने यूपी नगर निगम (पार्किंग स्थान का सन्निर्माण, अनुरक्षण और प्रचालन) नियमावली-2025 को मंजूरी दे दी है।

16 साल बाद इतनी जल्दी आएगा मानसून

- 1 जून की जगह 27 मई को केरल पहुंचेगा
- अबकी सामान्य से ज्यादा बारिश की संभावना

नई दिल्ली (एजेंसी)। मानसून देश में इस बार तय समय से 4 दिन पहले पहुंच सकता है। मौसम विभाग के मुताबिक दक्षिण-पश्चिम मानसून 27 मई को केरल तट से टकराएगा। आमतौर पर यह 1 जून को केरल पहुंचता है। मौसम विभाग के मुताबिक, अगर मानसून 27 मई को आता है तो यह 16 साल में पहली बार होगा जब यह इतनी जल्दी दस्तक देगा। 2009 में 23 मई को और 2024 में 30 मई को मानसून ने केरल में दस्तक दी थी। इसके अलावा 2018 में 29 मई को मानसून आया था। आईएमडी ने बताया कि 1 जून को केरल पहुंचने के बाद मानसून 8 जुलाई तक अन्य राज्यों को कवर करता है। 17 सितंबर के आसपास राजस्थान के रास्ते वापसी शुरू करता है और 15 अक्टूबर तक पूरा हो जाता है। अर्थ एंड साइंस मिनिस्ट्री के सेक्रेटरी एम रविचंद्रन ने कहा- जून से सितंबर के दौरान सामान्य से ज्यादा बारिश होने की संभावना है। 4 महीने के दौरान 87 एमडी के औसत से 105

फीसदी बारिश हो सकती है। आमतौर पर 96 से 104 फीसदी बारिश को सामान्य माना जाता है। 90 फीसदी से कम बारिश को सामान्य से बहुत कम, 90 से 95 फीसदी के बीच सामान्य से कम, 104 से 110 फीसदी के बीच सामान्य से ज्यादा और 110 फीसदी से ज्यादा बारिश बहुत ज्यादा माना जाता है। आईएमडी के एक अधिकारी ने कहा कि मानसून के दौरान देश भर में होने वाली कुल वर्षा और शुरुआत की तारीख के बीच कोई सीधा संबंध नहीं है। केरल में जल्दी या देर से आने वाले मानसून का मतलब यह नहीं है कि यह देश के अन्य हिस्सों को भी उसी तरह कवर करेगा। आईएमडी ने 9 मई को कहा था कि 13 मई के आसपास मानसून के अंडमान और निकोबार, बंगाल की खाड़ी के कुछ हिस्सों में आगे बढ़ने की बहुत संभावना है। हालांकि, भारत में मानसून सीजन के आने की आधिकारिक घोषणा इसके केरल पहुंचने पर ही की जाती है।

कैसे लगे धमाके... कर्नल सोफिया ने भाई को किया कॉल

प्रेस कान्फ्रेंस के बाद जो कहा, गर्व से सीना चौड़ा हो जाएगा

जबलपुर (एजेंसी)। भारत-पाकिस्तान तनाव के बीच कर्नल सोफिया कुरैशी चर्चा में हैं। कर्नल सोफिया कुरैशी ने ऑपरेशन सिंदूर के बाद अपने भाई को फोन किया और धमाकों के बारे में पूछा। उनकी भाभी उजमा कुरैशी ने यह जानकारी दी। उजमा, जो अपनी बेटियों के साथ मायके आई हैं, ने बताया कि कर्नल सोफिया ने आतंकवादियों को मुंहतोड़ जवाब दिया। इस ऑपरेशन का नाम 'सिंदूर' इसलिए रखा गया क्योंकि आतंकवादियों ने कई महिलाओं का सिंदूर उजाड़ दिया था। कर्नल सोफिया कुरैशी के भाई नूर कुरैशी का निकाह 2011 में उजमा कुरैशी से हुआ था। उजमा, जो अधारताल के संजीवनी अस्पताल में काम करती हैं, अपनी दो बेटियों के साथ बड़ौदा से जबलपुर आई हैं। उन्होंने बताया कि कर्नल सोफिया ने ऑपरेशन के बारे में परिवार को पहले से कुछ नहीं बताया था। उन्हें यह खबर न्यूज से पता चली। प्रेस कॉन्फ्रेंस के बाद कर्नल सोफिया ने अपने भाई को फोन किया और पूछा, कैसे लगे धमाके।

बांग्लादेश से हसीना की पार्टी का नामोनिशान मिटाने की है तैयारी

एनसीपी ने घेरा मोहम्मद यूनुस का घर, सरकार का बड़ा ऐलान

ढाका (एजेंसी)। बांग्लादेश की लंबे समय तक प्रधानमंत्री रहीं शेख हसीना की पार्टी अवामी लीग पर बैन लग सकता है। बांग्लादेश की मोहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार ने शुक्रवार को इसका संकेत दिया है। सरकार की ओर से कहा गया है कि पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना की अवामी लीग को बैन करने पर जल्द फैसला लिया जाएगा। एनसीपी कार्यकर्ताओं के यूनुस के घर के पास भारी विरोध प्रदर्शन के बाद सरकार का ये बयान आया है। विरोध अवामी लीग की सरकार बीते साल अगस्त में गिर गई थी, जब बांग्लादेश में बड़े

स्तर पर विरोध प्रदर्शन हुए थे। 5 अगस्त, 2024 को उस वक्त की पीएम शेख हसीना को आनन-फानन में ढाका छोड़ना पड़ा था। शेख हसीना इसके बाद से भारत में शरण लिए हुए हैं। रिपोर्ट के मुताबिक, मोहम्मद यूनुस के कार्यालय की ओर से जारी बयान में कहा गया कि अंतरिम सरकार अवामी लीग पर सत्ता में रहते हुए लगे तानाशाही और आतंकी गतिविधियों के आरोपों को लेकर गंभीर है। इसलिए इस पार्टी को बैन करने की तैयारी है।

पहले हमले को किया नाकाम फिर 5 एयरबेस में मचाई तबाही

- कर्नल सोफिया बोलीं-पाकिस्तान ने पंजाब एयरबेस पर दागी मिसाइल

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और पाकिस्तान के बीच सीजफायर का ऐलान हो गया है। इससे पहले विदेश और रक्षा मंत्रालय ने शनिवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इसमें कर्नल सोफिया कुरैशी ने कहा कि पाकिस्तान ने हाईस्पीड मिसाइल से जम्मू-कश्मीर के उधमपुर, पंजाब के पठानकोट, आदमपुर और गुजरात के भुज एयरबेस पर हमला किया, जिसमें हमें नुकसान पहुंचा है। पाकिस्तान ने अस्पताल और स्कूल को भी निशाना बनाने की कोशिश की, जिसे भारत ने नाकाम कर दिया। ब्रह्मोस फैसिलिटी तबाह करने पाकिस्तानी दावा गलत है। भारतीय एस-400 डिफेंस सिस्टम भी पूरी तरह सुरक्षित है। प्रेस कॉन्फ्रेंस में कर्नल सोफिया कुरैशी, विंग कमांडर व्योमिका सिंह और विदेश सचिव विक्रम मिसरी मौजूद थे। कर्नल सोफिया कुरैशी ने कहा...पाकिस्तानी सेना ने पूरे

पश्चिम मोर्चे पर लगातार आक्रामक गतिविधियां जारी रखी हैं। उसमें यूकैब ड्रोन, लॉन्ग रेंज वेपन, लाइट इम्युनिशन और लड़ाकू विमानों का उपयोग किया गया है। भारतीय सैन्य ढांचे को निशाना बनाया है। नियंत्रण रेखा पर भी ड्रोन घुसपैठ और भारी कैलिबर हथियारों से गोलाबारी की। अंतरराष्ट्रीय सीमा और एलओसी पर श्रीनगर से ढलिया तक 26 से ज्यादा स्थानों पर हवाई घुसपैठ के प्रयास किए गए। भारतीय सशस्त्र बलों ने अधिकांश खतरों को सफलतापूर्वक निष्क्रिय किया। फिर भी वायुसेना स्टेशनों उधमपुर, पठानकोट, आदमपुर और भुज, बठिंडा स्टेशन उपकरण और अफसरों को नुकसान पहुंचा है।

पीएम मोदी ने की तीनों सेनाध्यक्षों के साथ अहम बैठक

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव खत्म हो गया है। इससे पहले दिल्ली में बड़ी बैठक हुई। तीनों सेनाओं के सेनाध्यक्ष, सीडीएस और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह शनिवार को पीएम आवास पहुंचे। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ उनकी अहम बैठक हुई। इस बैठक में एनएसए अजीत डोभाल भी मौजूद रहे। माना जा रहा कि पाकिस्तान की ओर से जारी नापाक हरकत, मिसाइल और ड्रोन अटैक को लेकर इस बैठक में चर्चा हुई। साथ ही आगे की रणनीति पर भी विचार हुआ। वहीं अमेरिका की ओर से पाकिस्तान पर बढ़ते दबाव के बाद उसके रुख में बड़ा बदलाव आया और वह सीजफायर को राजी हो गया। शाम को इसका ऐलान भी हो गया।

हमारी सेनाएं पूरी तरह तैयार, फिर हमला किया तो मुंहतोड़ जवाब देंगे

- सीजफायर के बाद रक्षा मंत्रालय की प्रेस कॉन्फ्रेंस, आर्मी ऑफीसर्स ने दिया तगड़ा जवाब

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत-पाकिस्तान के बीच सीजफायर के ऐलान के बाद शनिवार शाम को रक्षा मंत्रालय ने प्रेस कॉन्फ्रेंस की। इसमें आर्मी से कर्नल सोफिया कुरैशी, एयरफोर्स से विंग कमांडर व्योमिका सिंह और नेवी से कमोडोर रघु आर नायर मौजूद थे। रक्षा मंत्रालय की ब्रीफिंग कुल 9 मिनट चली। इसमें कर्नल सोफिया ने पाकिस्तान की तरफ से गलत सूचनाएं फैलाने की जानकारी दी। वहीं कमोडोर नायर ने कहा कि भारत की सेनाएं पूरी तरह सतर्क और तैयार हैं। अगर फिर हमला हुआ, तो हम मुंहतोड़ जवाब देंगे। कर्नल सोफिया कुरैशी ने कहा अब मैं आपको पाकिस्तान की मिस इन्फॉर्मेशन कैंपेन के बारे में जानकारी दूंगी। पहला उसने अपने जेएफ-17 से हमारे एस-400 और ब्रह्मोस मिसाइल बेस को नुकसान पहुंचाया। ये बिल्कुल गलत है। उसका कहना है कि हमारी एयरफील्ड सिरसा, जम्मू, पठानकोट और भुज में हमला किया है, ये भी पूरी तरह से गलत है। हमारे चंडीगढ़ और ब्यास स्थित हथियार खाने पर हमला किया, यह बात भी गलत है। हमने आपको सुबह भी बताया था कि ये सभी मिलिट्री फैसिलिटीज पूरी तरह सुरक्षित हैं, इन्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचा है। पाकिस्तान कह रहा है कि भारत ने मस्जिदों को नुकसान पहुंचाया। भारत एक धर्मनिरपेक्ष देश है। भारत की सेना उसकी वैल्यूज की बहुत अच्छी झलक है। हमने उनके मिलिट्री इन्फ्रास्ट्रक्चर को नुकसान पहुंचाया। भारत ने पाकिस्तान की एयरफील्ड स्कर्दू, जकूबाबाद, सरगोदा और बुलारी को बहुत नुकसान पहुंचाया है। हमने पाकिस्तान के एयर डिफेंस सिस्टम, रडार सिस्टम को फेल किया। उनके मिलिट्री सिस्टम का हमने नुकसान किया। इंडियन आर्म्ड फोर्सेस पूरी तरह तैयार हैं। भारत की संप्रभुता और अखंडता की रक्षा के लिए तैयार है। इसके अलावा पाकिस्तान के एयर डिफेंस सिस्टम, रडार सिस्टम को बेकार कर दिया। एलओसी के पास पाकिस्तान के कमांड एंड कंट्रोल लॉजिस्टिक इंस्टालेशन और उनके मिलिट्री इन्फ्रास्ट्रक्चर्स और उनके पर्सनल का इतना नुकसान हुआ कि पाकिस्तान की ऑफेंसिव और डिफेंसिव कैपेबिलिटी को नष्ट कर दिया गया।

ऑपरेशन सिंदूर में मारे गए आतंकियों की लिस्ट जारी

- इसमें कंधार हाईजैक-मुंबई हमले के कई मास्टरमाइंड शामिल

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत ने 7 मई को ऑपरेशन सिंदूर के तहत पाकिस्तान और पीओके में 100 से ज्यादा आतंकियों को मार गिराया था। न्यूज एजेंसी ने खुफिया एजेंसियों के हवाले से शनिवार को इनमें से 5

आतंकियों की लिस्ट जारी की। इनके नाम अबू जुंदाल, हाफिज मुहम्मद जमील, मोहम्मद यूसुफ अजहर, मोहम्मद सलीम, घोसी साहब और मोहम्मद हसन खान हैं। यूसुफ कंधार हाईजैक का मास्टरमाइंड और जुंदाल मुंबई हमले में शामिल था। भारत ने 22 अप्रैल को पहलगाम अटैक के बाद आतंकियों के 9 ठिकानों को मिसाइल से निशाना बनाया था। ये पांचों आतंकी एक साथ या अलग-अलग मारे गए, इसकी जानकारी सामने नहीं आई है।

लश्कर-ए-तैयबा का आंतकी मुदस्सर खाडियान खास मरकज तैबा, मुरिदके का प्रमुख था। पाकिस्तानी सेना द्वारा उसके अंतिम संस्कार में गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। पाक आर्मी चीफ और पंजाब की मुख्यमंत्री मरियम नवाज की ओर से पुष्पांजलि अर्पित की गई। नमाज-ए-जनाजा सरकारी स्कूल में हुई, जिसका नेतृत्व हाफिज अब्दुल रऊफ ने किया।

इस दौरान लेफ्टिनेंट जनरल और पंजाब पुलिस के आईजी भी मौजूद थे। यह जैश-ए-मोहम्मद का आतंकी थी। यह मौलाना मसूद अजहर का साला भी था। मरकज सुब्हान अल्लाह, बहावलपुर का प्रभारी था। मुस्लिम युवाओं को कट्टरपंथी बनाने और फंडिंग में सक्रिय भूमिका निभाता था। यह जैश-ए-मोहम्मद से जुड़ा आतंकी थी। यह भी मौलाना मसूद अजहर का साला था। यह जेएम के लिए हथियारों की ट्रेनिंग का प्रमुख प्रशिक्षक था। जम्मू-कश्मीर में कई आतंकी हमलों में शामिल। सीए-814 विमान अपहरण मामले में वांटेड था।

इंदौर में लगेगी स्वामी विवेकानंद की सबसे ऊंची प्रतिमा

आज सीएम करेंगे भूमिपूजन, मिलेगा नया सांस्कृतिक और पर्यटन केंद्र

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के सिरपुर स्थित देवी अहिल्या सरोवर उद्यान में स्वामी विवेकानंद की विश्व की सबसे ऊंची (52 फीट) प्रतिमा स्थापित कि जाएगी। यह भव्य प्रतिमा स्वामीजी की शिक्षा और दर्शन को जन-जन तक पहुंचाने का सशक्त माध्यम बनेगी। महापुरुषों के जीवन दर्शन को नई पीढ़ी तक पहुंचाने के उद्देश्य से इंदौर नगर यह ऐतिहासिक पहल कर रहा है। प्रतिमा स्थापित करने के लिए रविवार को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव भूमिपूजन करेंगे।

ये है प्रतिमा की खासियत

प्रतिमा की ऊंचाई 39.6 फीट, संरचनात्मक आधार सहित कुछ ऊंचाई करीब 52 फीट की रहेगी। इसका वजन 14 टन रहेगा। यह प्रतिमा विभिन्न धातुओं से बनेगी, जो जलवायु प्रतिरोधी और दीर्घकालीन स्थायित्व के लिए उपयुक्त रहेगी।

वर्तमान में विश्व की सबसे ऊंची प्रतिमा 35 फीट कर्नाटक के उडुपी में स्थित है। इंदौर में जो प्रतिमा लगेगी उसे ख्यातिप्राप्त मूर्तिकार नरेश कुमावत बनाएंगे। कुमावत ने देशभर में कई प्रतिष्ठित मूर्तियां बनाई हैं। प्रतिमा स्थल पर स्वामी विवेकानंदजी के जीवन और विचारों पर आधारित एक विशेष गैलरी भी स्थापित की जाएगी। जहां चित्रों, दस्तावेजों और डिजिटल माध्यमों से युवाओं को प्रेरित किया जाएगा। यह स्थान इंदौर के लिए एक नई पहचान, सांस्कृतिक गौरव और पर्यटन विकास का केंद्र बनेगा।

भूमिपूजन समारोह आज

इस ऐतिहासिक परियोजना के लिए रविवार को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव भूमिपूजन करेंगे। यह आयोजन इंदौरवासियों के लिए गौरव और उत्साह का विषय होगा। इस अवसर पर शहर के सभी जनप्रतिनिधि सहित लोग उपस्थित होंगे। इंदौर नगर निगम का यह प्रयास केवल प्रतिमा की स्थापना नहीं, बल्कि भारत के सांस्कृतिक मूल्यों और स्वामी विवेकानंदजी की विरासत को संजोने की दिशा में ठोस कदम है। यह परियोजना न केवल इंदौर बल्कि पूरे देश के लिए प्रेरणा का केंद्र बनेगी।

स्वामी विवेकानंदजी के विचारों से अवगत कराएगी-महापौर

महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने कहा कि यह प्रतिमा न केवल युवाओं को स्वामी विवेकानंदजी के विचारों से अवगत कराएगी, बल्कि उन्हें उनके बताए मार्ग पर चलने के लिए भी प्रेरित करेगी। स्वामीजी के आदर्श आज के युवाओं के लिए अत्यंत प्रासंगिक हैं और यह स्मारक उनके विचारों को स्थायी रूप देगा।

एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर में युवक की हत्या

दिनभर पत्नी और उसके प्रेमी के साथ घूमा, चाकू से मारकर पति ने थाने में किया सरेंडर

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के विजय नगर थाना क्षेत्र के श्रीराम नगर में शनिवार अलसुबह एक युवक की चाकू से गोदकर हत्या कर दी गई। हत्या के बाद आरोपी राजू यादव खुद थाने पहुंचा और पूरी घटना पुलिस को बताकर सरेंडर कर दिया। मामला एक एक्स्ट्रा मैरिटल अफेयर से जुड़ा है, जिसमें आरोपी की पत्नी अपने पति को छोड़कर मृतक युवक के साथ रहना शुरू कर दिया था। पुलिस के मुताबिक मृतक की पहचान बाबू सोना बैरागी (33), निवासी श्रीराम नगर के रूप में हुई है। वह मूल रूप से वेस्ट बंगाल का रहने वाला था और पिछले कुछ महीनों से इंदौर में एक क्लाउड किचन में कुक के तौर पर काम कर रहा था। घटना के बाद पुलिस ने शव को एमवाय अस्पताल भिजवाया और आरोपी को हिरासत में ले लिया है।

साथ घूमे फिर किया कत्ल

एडिशनल पुलिस कमिश्नर अमित सिंह ने बताया कि आरोपी राजू यादव मूल रूप से बिहार का रहने वाला है। उसकी पत्नी का बाबू सोना बैरागी से प्रेम-प्रसंग था। वह अपने पति को छोड़कर बाबू के साथ रहने लगी थी।राजू शुक्रवार को इंदौर आया था और पूरे दिन पत्नी और बाबू के साथ घूमता रहा, शॉपिंग की और रात

श्रीराम नगर में साथ ही रुका। पुलिस के मुताबिक, राजू ने पहले से ही हत्या की योजना बना रखी थी। शनिवार अलसुबह उसने बाबू पर धारदार चाकू से कई वार कर उसकी हत्या कर दी। इसके बाद वह सीधे खजराना थाना पहुंचा और खुद को पुलिस के हवाले कर दिया।

आरोपी से पूछताछ जारी

घटना का खुलासा होने के बाद विजय नगर पुलिस ने आरोपी को अपनी हिरासत में ले लिया। पुलिस अब यह पता लगाने में जुटी है कि क्या इस वारदात में कोई और भी शामिल था।

नेशनल लोक अदालत

फैमिली कोर्ट में होगी सुलह; बिजली संबंधी मामलों में समझौते का मौका

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में शनिवार को लोक अदालत का आयोजन किया। जिला कोर्ट में गठित जजों की 65 खंडपीठों के माध्यम से आपसी समझौते से लंबित राशि के प्रकरणों का निराकरण किया गया। बिजली कंपनी द्वारा विभिन्न मामलों में छूट दी गयी। फैमिली कोर्ट में लंबे समय चल रहे दंपत्तियों के प्रकरणों में सुलह कराई गयी।

89 खंडपीठों में 88400 प्रकरण- जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के अध्यक्ष तथा प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश अजय श्रीवास्तव के मुताबिक नेशनल लोक अदालत के लिए इंदौर जिले में गठित 89 खंडपीठों में 65 खंडपीठ जिला कोर्ट व शेष तहसील अदालतों में हैं। निराकरण के लिए 12,361 केस रखे गए हैं। इसके अलावा बैंक रिकवरी के 76,039 केस रखे गए हैं। जिला कोर्ट में क्लेम प्रकरण सहित विभिन्न प्रकार के प्रकरण रखे गए। दुर्घटना प्रकरणों के पक्षकारों के वकील एवं बीमा कंपनी के बीच समझौते की प्रक्रिया पूरी हो गई है। उन समझौता प्रकरणों पर लोक अदालत में मुहर लगी।

युवती से रेप, ब्लैकमेल और जबरन धर्म परिवर्तन का प्रयास

आरोपी फरहान को हिंदू संगठन के कार्यकर्ताओं ने पकड़ा और पुलिस के हवाले किया

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के विजयनगर इलाके में निजी कंपनी में काम करने वाली 26 वर्षीय युवती ने अपने पूर्व टीम लीडर फरहान खान पर रेप, ब्लैकमेल और जबरन धर्म परिवर्तन का दबाव बनाने का आरोप लगाया है। पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर आरोपी फरहान को शुक्रवार को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी को न्यायिक हिरासत में भेजकर मामले की आगे जांच की जा रही है। विजयनगर पुलिस के अनुसार, युवती नागदा की रहने वाली है और 2023 में नौकरी की तलाश में इंदौर आई थी। वह एक निजी कंपनी में कार्यरत थी, जहां फरहान टीम लीडर के पद पर था। शीतल नगर इलाके में किराए के फ्लैट में अकेली रहने वाली युवती से फरहान ने नजदीकी बढ़ाई और जुलाई 2023 में एक दिन उसके फ्लैट पर जबरन रेप किया। जब पीड़िता ने पुलिस में शिकायत करने की बात कही, तो आरोपी ने उसे जान से मारने की धमकी दी और अपनी पहुंच का डर दिखाया।

इस्लाम धर्म कुबूल करने का बना रहा था दबाव- इसके बाद फरहान लगातार युवती पर दबाव बनाता रहा कि वह इस्लाम धर्म स्वीकार कर उससे निकाह करे। पीड़िता के इनकार करने के बावजूद, उसने कई बार जबरन संबंध बनाए और धमकी दी कि अगर उसने उसकी बात नहीं मानी तो उसकी जान को खतरा होगा। परेशान होकर युवती ने नौकरी बदल ली, लेकिन फरहान पीछा नहीं छोड़ रहा था।

इंदौर के होलकर स्टेडियम को बम से उड़ाने की धमकी

क्राइम ब्रांच को कुछ नहीं मिला, अब पता लगा रहे इमेल कहां से आया

इंदौर (एजेंसी)। मप्र क्रिकेट एसोसिएशन के सचिव के अधिकारिक इमेल एड्रेस पर एक ई-मेल आने से हड़कंप मच गया। इसमें एक स्टेडियम और अस्पताल को उड़ाने की धमकी दी गई थी। सचिव ने तुरंत तुकोगंज पुलिस को सूचना दी और बम डिस्पोजल स्क्वाड के साथ मौके पर पहुंची पुलिस ने होलकर स्टेडियम की जांच की। जिसमें कुछ नहीं मिला। ई-मेल अंग्रेजी में था। जिसमें लिखा था कि %आपके स्टेडियम में विस्फोट होगा। पाकिस्तान से पंगा मत लो। अपनी सरकार को समझाओ। पाकिस्तान के विश्वसनीय स्लीपर सेल देशभर में हैं। ऑपरेशन सिंदूर के कारण आपके स्टेडियम और अस्पताल में ब्लास्ट हो सकता है। ई-मेल में किसी स्टेडियम या अस्पताल का नाम नहीं लिखा था। चूंकि एमपीसीए का मुख्यालय इंदौर में है इसलिए होलकर स्टेडियम की जांच की गई। एमपीसीए के प्रशासनिक अधिकारी रोहित पंडित ने बताया कि-क्राइम ब्रांच और तुकोगंज थाने को शिकायत के बाद होलकर स्टेडियम की जांच की गई, लेकिन कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला।मामले में पुलिस ई-मेल की जांच कर रही है। यह पता लगाने की कोशिश की जा रही है कि ई-मेल कहां से आया था। मामले में क्राइम ब्रांच की टेक्निकल टीम भी जांच कर रही है।

एमपी भाजपा की ऑफिशियल वेबसाइट हैक

ओपन करने पर यू हैव बीन हैक्ड पीएफए साइबर फोर्स लिखा आया, 'ऑपरेशन बुनयान-अल-मरसूस' का जिक्र

भोपाल (नप्र)। भारत-पाकिस्तान के बिगड़े हालात के बीच हैकर्स ने शनिवार को मध्यप्रदेश भारतीय जनता पार्टी की ऑफिशियल वेबसाइट को हैक कर लिया है। जानकारी के मुताबिक हैकर्स ने बीजेपी की राष्ट्रीय वेबसाइट को भी हैक करने की कोशिश की है। बीजेपी से जुड़े सूत्रों ने बताया कि पार्टी की एमपी की वेबसाइट पर सुबह कुछ यूजर्स ने जाकर देखा तो उस पर पाकिस्तान ऑपरेशन का नाम लिखा हुआ आ रहा था। हालांकि अभी वेबसाइट पर भारतीय जनता पार्टी और 404 लिखा हुआ आ रहा है। बीजेपी आईटी सेल को वेबसाइट हैक होने की जानकारी जैसे ही मिली, टीम ने इसे ठीक करने का काम शुरू कर दिया। बीजेपी प्रदेश मीडिया प्रभारी आशीष अग्रवाल ने बताया कि सुबह वेबसाइट हैक होने की जानकारी मिली थी। टीम ने जानकारी मिलते ही इसे रिस्टोर कर लिया है। हालांकि अग्रवाल ने पार्टी की राष्ट्रीय वेबसाइट हैक होने की बात से इनकार किया।

वेबसाइट पर 'ऑपरेशन बुनयान-अल-मरसूस' लिखा

वेबसाइट के होमपेज पर यू हैव बीन हैक्ड पीएफए साइबर फोर्स लिखा हुआ नजर आ रहा था। हालांकि यह अभी तक साफ नहीं हुआ है कि वेबसाइट किसने हैक की है। हैक की गई वेबसाइट पर 'ऑपरेशन बुनयान-अल-मरसूस' का जिक्र प्रॉमिनेंटली दिखा। इस ऑपरेशन का नाम अरबी भाषा से लिया गया है, जिसका अर्थ है 'शीशे से बनी मजबूत दीवार'।

राष्ट्रीय वेबसाइट भी हैक करने की कोशिश

बीजेपी सूत्रों ने बताया कि हैकर्स ने एमपी के साथ ही बीजेपी की राष्ट्रीय वेबसाइट भी हैक करने की कोशिश की थी। हालांकि, बीजेपी की तरफ से इसे लेकर अब तक ऑफिशियल जानकारी सामने नहीं आई है। वहीं वर्तमान में जब गूगल पर बीजेपी की https://www.bjp.org/ वेबसाइट पर जाने की कोशिश की जा रही है तो प्लीज ट्राय अगेन 404 लिखा हुआ आ रहा है। पाकिस्तान के पॉलिटिकल एक्टिविस्ट तलाल हुसैन ने अपने ट्विटर हैंडल से एमपी बीजेपी की वेबसाइट हैक किए जाने की जानकारी शेयर की है।

2019 में भी हुई थी पार्टी की वेबसाइट हैक

भारतीय जनता पार्टी की आधिकारिक वेबसाइट को मार्च 2019 में भी हैक किया गया था। तब हैकर ने वेबसाइट पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का एक मीम शेयर करके कई अपशब्द भी लिखे थे। 2019 में करीब दोपहर साढ़े ग्यारह बजे बीजेपी की आधिकारिक वेबसाइट www.bjp.org को खोला गया, तो इसमें पहले कुछ आपत्तिजनक सामग्रियां देखी गई थीं। हालांकि, बाद में साइट डाउन हो गई और एरर का मैसेज दिखने लगा।

इस ऑपरेशन के बारे में पाकिस्तान की तरफ से भी बयान सामने आया था। फिलहाल बीजेपी संगठन के पदाधिकारियों का कहना है कि वेबसाइट को 15 से 20 मिनट में रिस्टोर कर लिया गया है। फिलहाल वेबसाइट खोलने पर 'ईआकओआर' दिख रहा है।

मैंगो जत्रा में इंदौरियों ने खूब खरीदे हापुस आम

रत्नागिरी, देवगढ़ के आमों की बढ़ी डिमांड, महाराष्ट्र के 23 से ज्यादा उत्पादकों ने लगाए स्टॉल्स

इंदौर (एजेंसी)। मराठी सोशल ग्रुप का सालाना आयोजन मेंगो जत्रा ग्रामीण हाट बाजार, ढक्कन वाला कुआं, साउथ तुकोगंज में शुरू हुआ। सुबह 9 बजे से ही इंदौरी लोग हापुस आम को खरीदने पहुंचने लगे थे। यह आयोजन 11 मई तक सुबह 9 से रात्रि 10 बजे तक चलेगा। संस्था के सुधीर दांडेकर और राजेश शाह ने बताया कि मेंगो जत्रा का शुभारंभ शनि उपासक महामंडलेश्वर दादू महाराज, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रांत सह संपर्क प्रमुख विनय पिंगले, उद्यमी राकेश रत्नपारखे ने किया। जत्रा में करीब 23 से अधिक आम उत्पादकों ने हिस्सा लिया है। मेंगो जत्रा में रत्नागिरी, देवगढ़ (कोंकण) के आम उत्पादक वहां के विशिष्ट हापुस आम और अन्य उत्पाद लेकर यहां ग्राहक को बेचते करते हैं। जत्रा के पहले ही दिन सुबह से ही इंदौरियों ने गर्मी के राजा आम का स्वाद चखा और हापुस आम खूब खरीदे। इस बार किसानों ने बढ़ चढ़ कर मेंगो जत्रा में हिस्सा लिया है। इंदौर में पहली बार सिर्फ जत्रा में ही सभी आम उत्पादकों के पास सरकार द्वारा प्रदत्त जीआई टैग उपलब्ध हैं।

इंदौर के टीआई मॉल पहुंची बम स्क्वॉड टीम

स्निफर डॉग और इक्विपमेंट्स से चप्पा-चप्पा खंगाला, लोगों के बैग भी चेक किए गए

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में शनिवार को अचानक बम डिटेक्शन एंड डिस्पोजल स्क्वॉड की टीम ट्रेजर आइलैंड मॉल पहुंची। टीम ने स्निफर डॉग और विशेष उपकरणों की मदद से मॉल का चप्पा-चप्पा चेक किया। इस दौरान मॉल में आए कुछ लोगों के बैग भी चेक किए गए। इसके बाद टीम एक अस्पताल में भी जांच करने पहुंची। भारत-पाक तनाव के बीच यह कार्रवाई की गई।

इससे पहले शुक्रवार को इंदौर के होलकर स्टेडियम को बम से उड़ाने की धमकी मिली थी। ये धमकी ईमेल के जरिए दी गई थी।

इस सूचना के बाद स्टेडियम में बम डिस्पोजल स्क्वॉड से स्टेडियम की तलाशी करवाई गई, हालांकि वहां कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला। इस मामले की जांच क्राइम ब्रांच की टेक्निकल टीम कर रही है।

दक्षिण भारत से सीधा जुड़ेगा मालवा क्षेत्र

इंदौर-हरदा फोरलेन बनकर तैयार, 12 ब्रिज और 19 अंडरपास से होगा आवागमन

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर-नागपुर कॉरिडोर की सबसे अहम कड़ी इंदौर-हरदा हाईवे का काम तेजी गति से चल रहा है। वर्तमान में 70 प्रतिशत से ज्यादा काम हो चुका है। एनएचएआई का दावा है कि इस फोरलेन का 90 प्रतिशत काम जून तक पूरा कर लेंगे। वहीं बारिश के बाद बचा हुआ फिनिशिंग का 10 प्रतिशत काम पूरा कर इस फोरलेन को ट्रैफिक के लिए शुरू कर दिया जाएगा। इंदौर-हरदा फोरलेन की शुरुआत बायपास स्थित मॉल के पास से हुई है। यह बेगमखेड़ी, खुड़ेल खुर्द, गोगाखेड़ी और मिर्जापुर होते हुए राघौगढ़ पर मौजूदा नेमावर रोड से मिलेगा।

इंदौर से नागपुर जाने में होगी 3 घंटे की बचत

1011 करोड़ रुपए की लागत से बन रहे इंदौर-हरदा फोरलेन के तैयार होने के बाद इंदौर से नागपुर जाने में कम से कम 3 घंटे का समय

बचेगा। इंदौर से जाने वाले वाहन इस रोड के बनने के बाद सीधे हरदा-बैतूल होते हुए नागपुर पहुंचेंगे। अभी इंदौर से नागपुर जाने वाले वाहनों को देवगुराड़िया रोड होते हुए जाना पड़ता है। यह रोड टू लेन है। जिसके कारण वाहनों को नागपुर पहुंचने में कम से कम 8 घंटे 50 मिनट का समय लगता है। इंदौर-हरदा फोरलेन के बनने से वाहन सिर्फ 6 घंटे में ही इंदौर से नागपुर पहुंच जाएंगे। एनएचएआई द्वारा बनाए जा रहे इस हाईवे के मुख्य मार्ग के अधिकांश हिस्से में डामरीकरण हो चुका है।

इससे अब पुरानी नेमावर रोड और कनाड़िया रोड से लगे हुए गांवों का कुछ ट्रैफिक इस रास्ते पर शिफ्ट हो गया है। जिससे देवगुराड़िया सड़क का दबाव कम हुआ है। इंदौर-हरदा हाईवे के पूरी तरह बनने पर पुरानी सड़क के ट्रैफिक का एक बड़ा हिस्सा इस हाईवे पर शिफ्ट हो जाएगा। हालांकि अब भी भारी वाहन हरदा और बैतूल जाने के लिए नेमावर रोड पर ही चल रहे हैं। लेकिन छोटी गाड़ियां आसानी से नए हाईवे पर चलने लगी हैं। इस हाईवे पर कुल मिलाकर 12 छोटे-बड़े ब्रिज भी बनाए जाने हैं, जिन पर काम चल रहा है। इनमें से गोगाखेड़ी, खुड़ैल और आक्या गांव की क्रॉसिंग पर बने ब्रिज पर भी ट्रैफिक शुरू हो चुका है।

इंदौर नगर बीजेपी कार्यकारिणी की कवायद तेज

नगर उपाध्यक्ष और मंत्री इस बार नए चेहरे होंगे, 1 नगर महामंत्री का रिपीट होना तय

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर बीजेपी में नगर कार्यकारिणी गठन को लेकर कवायद तेज हो गई है। कार्यकारिणी गठन को लेकर बीजेपी संगठन ने तैयारी शुरू कर दी है। बताया जा रहा है कि इस बार नगर कार्यकारिणी पिछली बार से छोटी रहेगी। बीजेपी संगठन से जारी हुई गाइडलाइन के अनुसार इस बार नगर अध्यक्ष को मिलाकर 90 लोगों की टीम बनेगी। जिसमें 8 उपाध्यक्ष, 3 महामंत्री, 8 मंत्री ओर 1 कोषाध्यक्ष बनाया जाएगा। टीम में लगभग 40 महिलाओं को भी स्थान दिया जाएगा। खास बात यह है कि इस बार विशेष आमंत्रित सदस्यों की संख्या सीमित करने की बात बीजेपी आलाकमान ने कही है।

बीजेपी नगर अध्यक्ष सुमित मिश्रा ने बताया- जल्द ही कार्यकारिणी गठन का काम पूर्ण हो जाएगा। पार्टी संविधान के अनुसार ही कार्यकारिणी का गठन किया जाएगा। इसकी तैयारी जारी है। बीजेपी नेताओं ने बताया कि इस बार की कार्यकारिणी पिछली बार से छोटी रहेगी। कार्यकारिणी को लेकर बीजेपी प्रदेश संगठन ने गाइडलाइन जारी की है जिसके हिसाब से टीम तैयार की जा रही है। बता दें, इंदौर बीजेपी नगर कार्यकारिणी में पिछली बार जहां 11 उपाध्यक्ष बनाए गए थे तो वहीं इस बार 8 उपाध्यक्ष ही बनाए जाएंगे। वहीं नगर मंत्री पिछली बार 12 बनाए गए थे इस बार 8 ही नगर मंत्री बनाए

जाएंगे। हालांकि पिछली बार सदस्यों की संख्या कुल 82 ही थी।

नगर उपाध्यक्ष और मंत्री इस बार नए चेहरे होंगे

बीजेपी नगर कार्यकारिणी में पिछली बार 11 उपाध्यक्ष ओर 12 नगर मंत्री बनाए गए थे। जिनमें से अधिकांश रिपीट हुए थे। लेकिन बीजेपी सूत्रों की मानें तो इस बार किसी के भी रिपीट होने की संभावना बहुत कम है। बताया जा रहा है कि 8 बीजेपी उपाध्यक्ष और 8 नगर मंत्री नए चेहरों को ही बनाया जाएगा। नगर उपाध्यक्ष ओर मंत्री को रिपीट नहीं करने के पीछे का कारण यह बताया जा रहा है कि यह अपनी-अपनी विधानसभा में तो सक्रिय रहे, लेकिन नगर संगठन द्वारा दिए जाने वाले कामों की जवाबदारी से बचते रहे, वहीं अधिकांश उपाध्यक्ष और मंत्री बनने के बाद भाजपा कार्यालय से भी दूर हो गए।

1 नगर महामंत्री होंगे रिपीट, 2 को बदला जाएगा

बीजेपी संगठन में नगर अध्यक्ष के बाद सबसे अहम मानें जाने वाले पद नगर महामंत्री और कोषाध्यक्ष को लेकर बताया जा रहा है कि वर्तमान नगर महामंत्री सुधीर कोले को रिपीट किया जाएगा। वहीं, सविता अखंड और संदीप दुबे को नई भूमिका दी जाएगी। इन दोनों की ही जगह दो नए नगर महामंत्री बनाए जाएंगे। बीजेपी सूत्रों की मानें तो यह दो पद विधानसभा 1, 2 और 3 के ही किसी नेताओं को दिए जाएंगे। वहीं सूत्रों के अनुसार सविता अखंड और संदीप दुबे को सदस्यों की सूची या फिर नगर उपाध्यक्ष बनाया जाने की संभावना है।

कोषाध्यक्ष, नगर कार्यालय मंत्री होंगे रिपीट- बीजेपी संगठन द्वारा तय की गई गाइडलाइन के अनुसार नगर कार्यकारिणी में कोषाध्यक्ष, नगर कार्यालय मंत्री ओर मीडिया संयोजक को रिपीट करने के लिए कहा गया है। हालांकि यह भी गाइडलाइन में कहा है कि इन तीनों ही पदों पर परिवर्तन तब ही किया जाए जब बहुत ही आवश्यकता लगे। बीजेपी सूत्रों की मानें तो कोषाध्यक्ष गुलाब सिंह ठाकुर ओर मीडिया संयोजक रितेश तिवारी व नितिन द्विवेदी को रिपीट किया जाना लगभग तय है।

कार्यकारिणी में महिलाओं की संख्या 40 रहेगी

नगर कार्यकारिणी में इस बार महिलाओं की संख्या बढ़ाने पर जोर दिया गया है। पिछली बार जहां इंदौर नगर कार्यकारिणी में 24 महिलाओं को स्थान दिया गया था तो वहीं इस बार टीम में 40 से ज्यादा महिलाओं को स्थान देने की बात बीजेपी की गाइडलाइन में कहीं गई है। बीजेपी की गाइडलाइन के अनुसार इस बार कार्यकारिणी में 90 सदस्यों में से 36 महिलाएं होना चाहिए जिसमें भी 6 महिलाएं अजा और अजजा से होना चाहिए। पिछली बार सदस्यों में इनकी संख्या 18 ही थी। वहीं, नगर पदाधिकारियों में इस बार महिलाओं की संख्या 9 होना चाहिए। जिसमें 2 महिलाएं अजा और अजजा से होना जरूरी है। पिछली बार नगर पदाधिकारियों में इनकी संख्या 6 थी।

मदर्स डे पर विशेष

मनीषा मंजरी

ममता की मौन परछाइयाँ

माँ यह मात्र एक शब्द नहीं, बल्कि एक एहसास है। ममता त्याग, स्नेह, और निःस्वार्थ प्रेम का सबसे शशक्त और पवित्र रूप है। हमारे शास्त्रों में भी माता का महिमागान करते हुए कहा गया है-

'नास्ति मातृसमा छाया, नास्ति मातृसमा गति
नास्ति मातृसमं त्राण, नास्ति मातृसमा प्रिया'

अर्थात् माता के समान कोई छाया नहीं है, माता के समान कोई अन्य आश्रय नहीं है। माता के समान कोई रक्षक नहीं है और माता के समान कोई प्रिय वस्तु नहीं है। मां जीवन की प्राण वायु है। वह जीवन की जननी, पहली गुरु और सृष्टि के चक्र की केंद्रीय धुरी है। इसलिए कहा भी गया है कि 'स्त्री ना होगी जग म्हं सृष्टि को रचावै कौण, ब्रह्मा विष्णु शिवजी तीनों, मन म्हं धारें बैठे मौन । अर्थात् यदि स्त्री नहीं होती तो सृष्टि की रचना नहीं हो सकती थी।

मातृदिवस एक ऐसा अवसर है जिस दिन सम्पर्ण विश्व माँ की हीं महिमा का गुणगान करता है। उनकी गोद, उनके आँचल, उनके अपार प्रेम को फूलों, आभारों और भावनाओं का उपहार देने की कोशिश की जाती है। परन्तु इस दिन एक ऐसा भी वर्ग समाज में मौजूद है जो खामोशी से अपनी भावनाएं खुद में दबाये निःशब्दिता से बस मुस्कुरा देता है, या किसी अँधेरे कोने में खुद को गायब करने की नाकामयाब कोशिशें करता है, कोना जहां ना कोई बधाई पहुँचती है, न कोई आभार और ना कोई तोहफा- ऐसी स्त्रियां जो माँ नहीं बन सकीं। इन स्त्रियों को अक्सर कोई नाम नहीं दिया जाता, परन्तु इनके भीतर भी वही ममता का सागर लहराता है, जो एक माँ में होता है।

वे स्त्रियां जो माँ बनने की तीव्र इच्छा रखती हैं, पर किसी कारणवश यह अनुभव नहीं पा सकीं- कभी चिकित्सकीय कारणों से, कभी विवाह न हो पाने या टूट जाने के कारण, तो कभी स्वेच्छा से अकेले जीवन को अपनाने के कारण।।इन स्त्रियों की पीड़ा को समाज अक्सर देख नहीं पाता, या देख कर भी अनदेखा कर देता है। क्योंकि माँ न बन पाने को हम अधूरापन मानते हैं, और उस अधूरेपन पर सहानुभूति नहीं, अजीब सी चुप्पी ओढ़ लेते हैं, या फिर कटाक्ष करते हैं। पर क्या ममता केवल उस स्त्री की थाती है जो शारीरिक रूप से माँ बनी हो? क्या माँ बनने की भावना, मातृत्व का भाव, केवल गर्भ धारण करने से ही परिभाषित होता है?

माँ बनने की चाह - एक अनकहा संघर्ष

माँ बनने प्रबल इच्छा और उसका पूर्ण ना हो पाना, यह एक ऐसा दुःख है जिसे शब्दों में पिरोना आसान नहीं। यूँ तो आज के आधुनिक चिकित्सा प्रणाली ने बहुत कुछ आसान कर दिया है, परन्तु हर स्त्री के लिए ये सफर एक जैसा नहीं हो पता। कुछ स्त्रियाँ कई वर्षों तक संतान के लिए संघर्ष करती हैं- उपचार, दवाइयाँ, मानसिक दबाव, और हर माह एक टूटी हुई उम्मीद। समाज का दबाव, परिवार की अपेक्षाएँ, और अपनी आत्मा के भीतर पलती मातृत्व की पुकार, यह एक ऐसा अदृश्य युद्ध है जो इन स्त्रियों को भीतर से तोड़ देता है, पर वे हर दिन खुद को समेट कर मुस्कुराती हैं।

कुछ स्त्रियाँ विवाह न होने या टूट जाने के कारण माँ नहीं बन पातीं। कुछ ने अपने आत्मसम्मान के लिए अकेलापन चुना, तो कुछ जीवन की परिस्थितियों में उलझ कर उस राह पर जा ही नहीं सकीं, कुछ ने किसी का इंतज़ार किया और समय निकल गया और कुछ ने अकेलेपन को अपनाया क्यूंकि यही उनके सुकून की गारंटी थी। पर इसका मतलब यह नहीं कि उनके भीतर ममता नहीं। उनके भी सपनों में बच्चों की किलकारी गूंजती है, उनके भी घर के कोनों में अधूरी कहानियाँ बसी होती हैं।

मातृत्व की अदृश्य परछाइयाँ

मातृत्व को धारण करना सिर्फ एक जैविक प्रक्रिया नहीं बल्कि एक भावनात्मक और आध्यात्मिक अनुभूति भी है। कुछ स्त्रियां भले हीं माँ ना बनी हो पर उन्होंने मातृत्व को धारण किया है, कभी छोटे भाई-बहन को माँ की परवरिश देकर, कभी किसी अनाथ बच्चे की देखभाल कर, या कभी समाज की सेवा में स्वयं को समर्पित कर।

ऐसी महिलाएँ कभी तो शिक्षिका बनकर सैकड़ों बच्चों को संवारती हैं, तो कभी डॉक्टर बनकर मरीजों

को ज़िन्दगी देती हैं, तो कभी परामर्शदाता बनकर टूटे दिलों को जोड़ती हैं, क्या यह सब मातृत्व नहीं है? ममता केवल गर्भ से नहीं, हृदय से जन्म लेती है।

वे जो खो चुकीं अपनी संतति

एक तरफ माँओं का वो वर्ग है, जिन्होंने अपने संतानों को खोया है। कभी गर्भ में, कभी जन्म के बाद कोई दुर्घटना, या कोई बीमारी - ऐसी त्रासदी जिनका कोई शब्द नहीं, कोई सांत्वना नहीं। वे स्त्रियाँ माँ बनीं, पर उनके बच्चों का साथ कुछ पल, कुछ दिनों, या कुछ वर्षों का ही रहा। वे भी माँ थी और रहेंगी, बस उनका बच्चा उनकी दुनिया में ना हो कर, उनकी यादों में है। वे उस हर पल में माँ हैं, जब वे बच्चों के छोटे कपड़ों को देखकर अपने आंसुओं को रोकती हैं, जब वो एक कोना पकड़ कर खामोशी से बैठ जाती हैं, जब वे रास्ते पर बिना कुछ कहे किसी की मुस्कराहट में अपने बच्चे की हंसी तलाशती हैं। उनकी ममता मौन होकर भी अनंत होती हैं।

अकेलेपन में ममता की गूंज

समाज में कई स्त्रियाँ हैं जिन्होंने विवाह नहीं किया, या विवाह के बाद मातृत्व का विकल्प नहीं चुना, पर उनके भीतर भी मातृप्रवृत्ति जीवंत होता है। वे पशुओं की सेवा करती हैं, वृद्ध माता-पिता का सहारा बनती हैं, या किसी ऐसे बच्चे को पढ़ाती हैं जिसे कोई नहीं पूछता। वे चुपचाप किसी के जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाती हैं, वो भी बिना किसी अपेक्षा के। उनके आँचल में भी ममता की वही कोमलता है, जो किसी माँ के आँचल में होती है।

मातृत्व को पुनर्परिभाषित करना

समाज को चाहिए कि वह माँ के अर्थ को पुनः परिभाषित करे। माँ केवल वह नहीं जो बच्चे को जन्म दे, माँ वह भी है जो जीवन को सहेजती है, उसे संवारती है, और दूसरों को निःस्वार्थ प्रेम देती है। मातृत्व एक भावना है, न कि कोई औपचारिक पहचान।

मदर्स डे पर जब हम उपहार खरीदते हैं, सोशल मीडिया पर पोस्ट डालते हैं, तब कुछ पल उन स्त्रियों को भी याद करें –

जो माँ बनना चाहती थीं, पर बन न सकीं।

जो किसी परिस्थिति या फैसले के कारण मातृत्व से दूर रह गईं।

जिन्होंने बच्चे को खो दिया, पर ममता आज भी उनके भीतर जीवित है।

जिन्होंने बिना संतान के भी दुनिया को प्रेम दिया, सहारा दिया।

यह आलेख उन स्त्रियों को समर्पित है जिनकी ममता को समाज ने अक्सर अनदेखा किया, जिन्होंने अपनी भावनाओं को चुपचाप जीया, और जिनके आँचल में कभी कोई सिर नहीं आया, पर उन्होंने फिर भी उस आँचल को फैलाए रखा, किसी उम्मीद, किसी सपने, किसी दुआ के लिए। जो माँ नहीं बनीं, पर जिनके भीतर की ममता माँ से कम नहीं। जो अधूरी नहीं, बस एक अलग प्रकार की पूरी हैं। इस मातृ दिवस, हम सब आपको एक मौन नमन देते हैं, आपके स्नेह को, आपकी इच्छाओं को, आपकी चुप्पियों को।

मदर्स डे विशेष

अम्बिका कुशवाहा 'अम्बी'

रणभूमि से रचनात्मकता तक मातृशक्ति का उत्सव

चूड़ियां कभी कमजोरी का प्रतीक नहीं रहीं, बल्कि नारी की शक्ति का प्रतीक हैं। जो माँ मृत्यु से लड़कर जीवन को जन्म देती है, वही युद्ध के मैदान में तलवार थामकर दुश्मनों को धूल चटाती है। उसकी कलाई की खनक रणभूमि में हुंकार बन जाती है, और उसका हौसला आसमान को चीर देता है।

समाज ने नारी को आश्रित और कमजोर समझने की भूल की, पर उसकी चूड़ियों की खनक ने हर बेड़ी तोड़ दी। आज नारी शक्ति न केवल घर की चौखट, बल्कि देश की सीमाओं पर भी नेतृत्व कर रही है। इस मदर डे पर, हम उस माँ की शक्ति को सलाम करते हैं, जो अपनी मातृभूमि के लिए ढाल बनती है और देश की आन-बान-शान के लिए तलवार उठाती है। साथ ही, उन पुरुषों और समाज के हर व्यक्ति को नमन, जिन्होंने नारी के साहस को प्रोत्साहित किया, उसके सपनों को पंख दिए, और उसे रणभूमि से लेकर नेतृत्व के शिखर तक पहुंचने में साथ दिया। यह स्पष्ट है कि यदि परवरिश और प्रोत्साहन बराबर मिले, तो नारी में भी अपार साहस और शक्ति है।

इतिहास में रानी लक्ष्मीबाई, चाँद बीबी जैसी वीरांगनाओं ने युद्ध के मैदान में अपनी शक्ति और नेतृत्व का परिचय दिया। आधुनिक समय में भी, सशस्त्र बलों में महिलाओं की भागीदारी और नेतृत्व इस शक्ति का प्रतीक है।

पहलगाम हमले में आतंकवादियों ने न केवल धर्म पूछकर हमारी भावनाओं का अपमान किया, बल्कि भारतीय नारी को अबला समझकर उनकी शक्ति और सम्मान को भी चुनौती दी। इस कायरतापूर्ण कृत्य ने हमारी सांस्कृतिक

एकता को निशाना बनाया। आतंकवादियों की यह भूल थी कि उन्होंने भारतीय नारी की शक्ति को कम आंका।

इस मातृशक्ति का जीवंत उदाहरण हैं कर्नल सोफिया कुरैशी और विंग कमांडर व्योमिका सिंह, जिन्होंने ऑपरेशन सिंदूर में अपनी वीरता और नेतृत्व से देश का मान बढ़ाया। कर्नल सोफिया, भारतीय सेना की सिग्नल कोर की साहसी अधिकारी, ने 2016 में बहुराष्ट्रीय सैन्य अभ्यास 'एक्सरसाइज फोर्स 18' में 40 सैनिकों का नेतृत्व कर इतिहास रचा। उनके दादाजी और पति, दोनों सेना के सम्मानित अधिकारी, ने उनके सैन्य जीवन के सपने को प्रेरणा दी। कांगो में संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन के दौरान, उन्होंने एक 5 वर्षीय बच्ची को उसके परिवार से मिलाकर ममता की मिसाल कायम की, जिसमें उनके पुरुष सहयोगियों और स्थानीय समुदाय ने उनका साथ दिया।

दूसरी ओर, विंग कमांडर व्योमिका सिंह, एक माँ के दृढ़ संकल्प के साथ आसमान छूने वाली वायु सेना की हेलीकॉप्टर पायलट, ने 2,500 से अधिक उड़ान घंटों के साथ बाढ़ राहत से लेकर युद्ध मिशनों तक अपनी ताकत दिखाई।

कर्नल सोफिया और विंग कमांडर व्योमिका को विश्व ने शक्ति के रूप में जाना, लेकिन हमारे समाज में ऐसी अनगिनत माएं हैं, जो परिस्थितियों के बोझ तले स्वयं ही शक्ति बन जाती हैं। ये वे माएं हैं, जो खेतों में पसीना बहाकर, मजदूरी करके या घर से बाहर कोई काम करके परिवार का पेट भरती हैं; वे माएं, जो तलाकशुदा या विधवा होने के बावजूद रात-दिन मेहनत कर अपने बच्चों के सपनों को उड़ान देती हैं; और वे माएं, जो समाज की कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाकर बदलाव की मशाल जलाती हैं। वे सभी व्यक्ति, जो इन मांओं के साहस को प्रोत्साहित करते हैं, इस मातृशक्ति का अभिन्न हिस्सा हैं।

माँ से तो हर दिन विशेष होता है। इस मदर डे पर, हम केवल कर्नल सोफिया और विंग कमांडर व्योमिका को ही नहीं, बल्कि हर उस मां को सलाम करते हैं, जो अपने बच्चों और देश के लिए जीती है। हम उन पुरुषों और समाज के हर वर्ग को भी नमन करते हैं, जिन्होंने इन मांओं को आगे बढ़ने का हौसला दिया–चाहे वह सोफिया के पति हों, जिन्होंने उनकी सैन्य महत्वाकांक्षाओं को समर्थन दिया, या व्योमिका के सहकर्मी, जिन्होंने उनके हर मिशन में साथ निभाया। नारी की चूड़ियां अब केवल श्रृंगार नहीं, बल्कि उस अटल संकल्प की गवाही हैं, जो घर, समाज, और देश की रक्षा करती हैं। ये नारियां और उनके समर्थक हर उस बेटी और बेटे के लिए प्रेरणा हैं, जो अपनी माँ की तरह मातृभूमि पर तिरंगा लहराने और एक बेहतर समाज बनाने का सपना देखते हैं। इस मदर डे पर, हम हर ऐसी माँ और उनके साथ खड़े हर शख्स को नमन करते हैं, जो जीवन को जन्म देने के साथ-साथ जरूरत पड़ने पर दुश्मनों का अंत भी करती हैं।

मदर्स डे विशेष

नलिन खोईवाल

माँ की थपकी

स्नेह की थपकी देना अच्छा लगा ।
सिर्फ़ माँ का प्यार ही सच्चा लगा ।।
****
यूँ बड़े थे लोग दुनिया में बहुत ।
माँ पुकारे हर कोई बच्चा लगा ।।
****
आफ़तों से वो बचाती हैं हमें ।
माँ नहीं तो हर घड़ी धोखा लगा ।।
****
पत्थरों से मोम मैं तो बन गया।
डांटना माँ का मुझे अच्छा लगा ।।
****
घर के बंटवारे में मुझको क्या मिला ।
जब मिली माँ कीमती हिस्सा लगा ।।
****
अक्स था मुझमें माँ की तहज़ीब का ।
माँ के संस्कारों का आईना लगा ।।
****
जब मिली माँ के न होने की ख़बर ।
तब मिरे दिल को बहुत सदमा लगा ।।
****
जब भी माँ की याद आती है मुझे ।
तब सदा बचपन मिरा ताज़ा लगा ।।
****
माँ नहीं तो ऐसा लगता है नलिन ।
माँ बिना जीवन अधूरा-सा लगा ।।

कमाल करती माँ

कब न किससे मलाल करती माँ ।
हर घड़ी बस कमाल करती माँ ।।

कोख में बेटियों को क्यों मारा ।
अब यही सब सवाल करती माँ ।।

हम तो कितने है दीन,दुनिया में ।
प्यार से पर निहाल करती माँ ।

अपने सुख-दुख सभी भुलाकर के ।
घर में सब का खयाल करती माँ ।।

ये तमस डर के भाग जाएगा ।
खोल आँखें उजाल करती माँ ।।

तल्खियाँ दूर सब हो जाती है ।
स्नेह से बोल-चाल करती माँ ।।

जब बड़े मनमुटाव रिश्तो में ।
गर्म जल सी उबाल करती माँ ।।

घर में तकरार जिस तरह की हो ।
पल में उसका निकाल करती माँ ।।

मुझ को डांटे या घर को चमकाए ।
जो करें बेमिसाल करती माँ ।।

जब ठिठुरते हुए मुझे देखें ।
झीन आंचल विशाल करती माँ ।।

जिन पलों से नलिन रहा वंचित ।
उन पलों को बहाल करती माँ ।।

लघुकथा

विनोद कुमार विक्की

स्टेटस वाली माँ

वृद्धाश्रम में माँ आज काफी खुश है। खुशी इस बात की नही कि उसके बेटे ने नई साड़ी या टूटा हुआ चश्मा बनवाकर दिया था, बल्कि खुशी तो इस बात की थी कि महीनो बाद उसका इकलौता बेटा उससे मिलने आया था। पूरे दस मिनट उसके पास बैठकर उसकी खैर-खैरियत के बारे में पूछा था। मोबाइल पर उसके साथ दर्जनों सेल्फी ली थी। वह बेटे के आगमन की सूचना वृद्धाश्रम की अन्य साथियों से खुशी-खुशी जाहिर कर रही थी। इधर माँ अपने पेटी बॉक्स से बेटे की तस्वीर निकाल कर निहार रही थी, दूसरी ओर बेटा माँ के साथ खींचीं हुई तस्वीरें मोबाइल के व्हाट्स ऐप स्टेटस पर लगा रहा था।

सच है ताई, काफी महीनों बाद आज तेरा लड़का तुझसे मिलने आया... क्या आज तुम्हारा या तुम्हारे बेटा का बर्थ डे है? उत्साहित माँ को देख सफाई कर्मी मनोरमा मुसकुराते हुए पूछ बैठी।

अरे नही रे, आज वो क्या कहते हैं...हाँ... हैप्पी मदर्स-डे है न ! माँ ने गहरी सांस लेते हुए कहा। जवाब सुन मनोरमा मन ही मन सोचने लगी कि जिस माँ का अपने परिवार में कोई स्टेटस नहीं रहा, आज मदर्स-डे के दौरान 24 घंटे अपने बेटे के मोबाइल स्टेटस पर सबको दिखाई देंगी।

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.)
विनोद तिवारी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
स्थानीय संपादक
हेमंत पाल
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

लघुकथा

रामेश्वरम तिवारी

बुद्ध और युद्ध

अमावस की स्याह घटाटोप रात। ऊपर आसमान में घने काले बादल छाए हुए हैं। ज़ोर-शोर से बिजलियाँ चमचमा रही हैं। घन गर्जन से दसों दिशाएँ थर-थर काँप रही हैं। तेज हवाएँ चल रही हैं। समंदर की विनाशकारी लहरें समुद्री तट से टकराकर हाथी की तरह ज़ोर-शोर से चिंघाड़ रही हैं। वातावरण में साँय-साँय की ध्वनि गूँज रही है। सुनामी धरा को लील जाने को मचल रही है। ऐसा लग रहा है, मानो द्वार पर मृत्यु दस्तक दे रही है।

आर्यावृत का प्रजापालक, महाप्रतापी, सर्वहितकारी राजा देशबंधु को चिंता के मारे नींद नहीं आ रही थी। वह अकेला कक्ष में चहल कदमी कर रहा था। खिड़की के बाहर हिलते हुए विशाल वृक्ष उसे भीमकाय राक्षस-से प्रतीत हो रहे थे। तभी सहसा उसकी नज़रें दीवार पर टंगी आदमकद महात्मा बुद्ध की ध्यानमग्न प्रतिमा पर जाकर टिक गईं।

राजा देशबंधु ने पल भर के लिए आँखें

बंद कीं। भगवान बुद्ध की प्रतिमा के समक्ष हाथ जोड़कर खड़ा हुआ। तभी उसके मस्तिष्क में बिजली सी कौंधी। उसे लगा जैसे उससे तथागत पूछ रहे हैं। वत्स! ऐसी क्या बात है कि जब इस प्रलयंकारी रात में संसार के समस्त प्राणी सुख-चैन की निद्रा में मग्न होकर सो रहे हैं तुम व्याकुल और विचलित दिखाई पड़ रहे हो।

राजा ने होश सँभाला और सहज होते हुए बोला- 'प्रभु! वो बात ऐसी है कि मैं आज तक दुनिया को आपका शाँति और अहिंसा वाला ''यह युद्ध का नहीं, बुद्ध का समय है'' का संदेश देता आ रहा हूँ। पर मेरे देश पर पड़ोसी शत्रु द्वारा बलात् युद्ध थोपा जा रहा है। कृपा कर मेरा मार्गदर्शन करें कि ऐसी स्थिति में मुझे क्या करना चाहिए।

अपने परम भक्त की मनोदशा को देख-सुनकर प्रभु का हृदय द्रवित हो उठा। साक्षात प्रकट हुए और शाँत स्वर में बोले- 'राजन! मानवता के सम्मान के लिए ये प्रेम, करुणा और अहिंसा जैसे मानव मूल्य ज़रूरी हैं, पर जब शत्रु समझाने-बुझाने पर भी नहीं मानता है और निर्दोषों की जीवन रक्षा के लिए युद्ध अनिवार्य हो जाए तब दुष्ट-दुर्जनों के अंत के लिए राम की तरह धनुष-बाण, परशुराम की तरह परसा, कृष्ण की तरह सुदर्शन और अर्जुन की तरह गाँडीव उठाने में कोई बुराई नहीं है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

कृतियों पर चर्चा से कतराते हैं लोग: नंद कात्याल

कलाकार नंद कात्याल अपने सुंदर और भावपूर्ण कलाकृतियों के साथ ही बेबाकी से बात रखने वाले कलाकार थे। कलाकारों, समीक्षकों और दर्शकों के बाबत भी बड़े ही सटीकता से अपनी बात रखते थे। प्रभावित करने वाली घटना संबंधित प्रश्न पर उनका कहना था कि 62 के शो के बाद मैंने 67 में वन मैन शो किया था। उसमें एक बहुत बड़ी बात हुई जो मैं अभी भी कहूँगा कि वैसे उदाहरण मिलने मुश्किल है। आज तो बिल्कुल भी नहीं मिलती ऐसी घटनाएं। वो घटना मेरे अंतर में अभी भी जस के तस काबिज़ है और वो क्षण सोच के मैं प्रफुल्लित हो उठता हूँ। मेरे एग्जिबीशन का शायद दूसरा या तीसरा दिन था। गैलरी में बिल्कुल ही शान्त वातावरण, कलाकृतियाँ सिर्फ और सिर्फ एक दूसरे को देखने और मूक संवाद में व्यस्त थीं, रह-रह कर मुझसे भी बतिया ले रहीं थीं। उसी समय मिस्टर अलकाजी शो देखने आ गये थे। मैं उनको जानता था लेकिन वो मुझे नहीं जानते थे। आने के बाद सीधे कृतियों से संवाद में लग गए।

शो देखते हुए उन्होंने गैलरी के दो-तीन चक्कर लगाए, आराम से बिल्कुल आराम से कृतियों से बतियाते रहे। उस समय गैलरी में कोई और नहीं था सिर्फ मैं ही था। मेरे पास आकर उन्होंने कहा कि भाई आपका काम देख के मन प्रसन्न हो गया। मुझे इतना अच्छा लग रहा है कि मैं क्या कहूँ पर मैं बहुत हैरान भी हूँ कि कोई आया क्यों नहीं। गैलरी में दर्शकों का न होना उन्हें खूब अखरा। आप ये देखिए कि उसके बाद वे अपने ऑफिस जाकर, तब वह राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय में निदेशक थे, मुल्कराज आनंद, जो चेयरमैन ललित कला अकादमी थे, को एक चिट्ठी लिखी जिसकी एक कॉपी मुझे भी दी, मेरे टीचर सान्याल साहब के पास भी भेजा, कुमार गैलरीज को भी भेजी। मैं आपको लेटर की कॉपी दूँगा। मैं कहूँगा कि आज तक मैंने ऐसा कोई आदमी नहीं देखा कि उसे किसी का काम पसंद आ जाय और वह ओपेनली जाकर अनाउंस करे कि लोग इनके काम को देखो और जाओ इंजॉय करो बहुत अच्छा काम है। हमारे दोस्त भी नहीं करते ऐसा। हाँ आपस में तो कह देते हैं लोग कि हाँ-हाँ ठीक है, बहुत बढ़िया है पर किसी कोने में कुछ कालापन जरूर बैठा होता है, कला को लेकर जो खुलापन दो कलाकारों के मध्य होना चाहिए अब नहीं दिखता।

लेकिन अलकाजी, इब्राहिम अलकाजी लोगों के लिए एक नायाब उदाहरण हैं। यह काफी हद तक फॉरेनर्स का असर है हमारे यहाँ ऐसा नहीं होता। मुझे इसका एक्सपीरियंस स्पैन पत्रिका में काम करते हुए हुआ। वो जो अमेरिकन एडिटर्स हैं विजुअल आर्ट्स की काफी समझ रखते हैं एजुकेशन और उसकी वैल्यू जानते हैं तथा उसके हिस्ट्री में बहुत इंट्रेस्ट लेते हैं लेकिन हमारे यहाँ जो एडिटर्स हैं वह इस पर ज्यादा ध्यान नहीं देते। अपने यहाँ लोग प्रदर्शनी में जाते हैं, चित्र अच्छे लगते हैं पर वो उसके बारे में कुछ कहें ये मुश्किल है। लोग आर्ट्स को देखते हैं, अच्छी तरह से देखते हैं लेकिन वो उस पर कुछ बोलते नहीं हैं जबकि उनको बोलना चाहिए वो अंदर ही अंदर रह जाते हैं। पता नहीं जानकर बोलना नहीं चाहते या अंदर के हिलोर को दबा ले जाते हैं, संशय है। कला की दुनिया संवादों के बीच और पनपती है, संवाद जरूरी है। प्रदर्शनियों से जुड़ी कोई खास अनुभव के बारे में चर्चा पर नंद कात्याल जी का कहना था कि 68 में एक बहुत बड़ी एग्जिबिशन हुई थी टू डिकेड्स आफ अमेरिकन आर्ट्स (अमेरिकन आर्ट्स के 20 साल) म्यूजियम ऑफ मॉडर्न आर्ट इसे लेकर आया था। प्रदर्शनी की खूबी यह थी कि एक बहुत बड़े आर्ट क्रिटिक हुए हैं जिन्होंने बहुत सी किताबें लिखी हैं क्लेमेंट ग्रीनबर्ग, उन्होंने तकरीबन सारे

हिंदुस्तान का आर्ट देखा, स्कल्पचर से लेकर माडर्न और ट्रेडिशनल तक, उस एग्जिबिशन में उन्होंने सारा राउंड लिया। हम लोग सभी थे?। एक-एक पेंटिंग के सामने खड़े होकर कभी 10 मिनट कभी 5 मिनट अपनी ओपिनियन दी और जो नहीं अच्छी लगी उसको बिल्कुल खदेड़ दिया। अच्छे को अच्छा बुरे को बुरा कहने का दमखम था उनके अंदर, सबसे बड़ी बात कि उनका संवाद या विचार कलाकृतियों पर था न कि कलाकार को देखकर उसके अनुरूप विचार की बात थी। कृतियों के कमियों और खूबियों पर उनकी अच्छी पकड़ थी, प्रदर्शनी में चित्रों से संवाद का उनका जो उपक्रम था बड़ा ही सीख देने वाला था। उसी प्रदर्शनी में बड़े ही डिफिकल्ट किसिम की एक पेंटिंग थी जिसको हम लोग सोचते थे कि ये कुछ खास है पर आश्चर्य कि उनके संवाद में वो एकदम से आम ही नज़र आई। मैं जब न्यूयॉर्क गया था तो मैं उनको मिला भी था। इसके बाद एक त्रिनाले हुआ था जिसमें एकाल आंग्रे जो बड़े फेमस मिनिमल आर्टिस्ट हैं, अभी भी हैं न्यूयॉर्क में वो भी यहाँ आए हुए थे, उन्होंने मुझे दो स्कल्प्चर्स भी दिए थे। ये इंटरनेशनल एग्जिबिशन का होना ग्रीनबर्ग का आना उस समय के जो डायलॉग्स थे वो एक अजीब खुराक हैं जो हमें अब भी ताकत देते हैं। ये जो टू डिकेड्स था, प्राइवेट था ललित कला एकेडमी के गैलरी में हुआ था। बड़े-बड़े लेक्चर्स हुए, कान्फ्रेंसेज भी हुईं। बड़े-बड़े राइटर्स, क्रिटिक सब आए हुए थे। उत्सव जैसा माहौल था।

उसके बाद ट्रेनाले के अगेंस्ट हम लोगों ने प्रोटेस्ट किया था करीब 100 आर्टिस्ट थे मुंबई, दिल्ली, कोलकाता और बड़ौदा से भी, दिल्ली के ज्यादा थे। हुआ ये कि अगर करना है तो अच्छी तरह से करो नहीं तो छोड़ दो। उस समय मुल्कराज आनंद थे, शिल्पी चक्र में मीटिंग भी हुई, एक ने कहा कि ये सब पैसा हम लोगों में बाँट दो, आर्टिस्ट बेचारे भूखे हैं कम से कम रंग तो खरीदेंगे और पेंटिंग बेचकर मजबूत हो सकेंगे। आखिर लाखों रुपए इस त्रिनाले में लगाओगे। खैर लोगों ने समझाया, हुसैन साहब भी आए हुए थे। जैसे ग्रीनबर्ग आए थे तो लोगों को वर्क के बारे में कितना नॉलेज हुआ था ऐसे ही जो इंटरनेशनल लोग आएंगे तो विचारों का, संसाधनों का, टेक्निक्स का आदान-प्रदान होगा। दसवें त्रिनाले में अपनी भूमिका के बारे में कात्याल जी का कहना था कि मेरा जो त्रिनाले में आना था तब तो खैर में रिटायर हो गया था जॉब से भी फ्री हो गया था और गढ़ी में स्टूडियो भी मिल गया था। एक्जबीसन की सारी तैयारी हो चुकी थी। 2 महीने पहले मुझसे कहा गया कि आप ऑर्गेनाइज कर दो, मैंने हाँ कर दी। एक्जबीशन के वर्क सेलेक्सन में मेरा कोई हाथ नहीं था। मैंने एक ही कंट्रीब्यूट किया कि जो हमारे सीनियर आर्टिस्ट हैं 70 के ऊपर, उनसे ये पूछा जाए कि जिस समय आप पेंटिंग कर रहे होते हैं, किस स्थिति से गुजर रहे होते हैं? क्या महसूस कर रहे होते हैं? अपना-अपना अनुभव आप सभी लिखें तो हम उसे कैटलॉग का पार्ट बनाएंगे। अकबर पदमसी, कृष्ण खन्ना, तैयब मेहता, परितोष सेन, सतीश गुजराल, और भी लोग थे, सभी ने अपना-अपना लिखा और बड़े अच्छी तरीके से लिखा और ये सफल भी रहा। बाद में कृष्ण खन्ना ने कहा भी कि ये बड़ा अच्छा रहा। मैंने उसका हिंदी अनुवाद भी करवाया। बाकी तो आप कैटलॉग देख ही सकते हैं। ये जो लिखवाने का एक सिस्टम था यह एक उपलब्धि थी पर हमारे यहाँ लोग पढ़ते बहुत कम हैं लेकिन पढ़ना न पढ़ना ये हमारे हाथ में नहीं है जो हमारे हाथ में है वो हमें जरूर करना चाहिए और मुझे खुशी है कि मैंने हमेशा जो करना चाहा उसे किया। कलाकृति नंद कात्याल जी की है, जो साभार गूगल से है।

ढाई आखर

डॉ. सुधीर सक्सेना

नये भारत की दीमक लगी शहतीरें

कहें पर काला खरी-खरी

परकाला प्रभाकर किसी परिचय के मोहताज नहीं है। वह राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीयपरिदृश्य की सुपरिचित शख्सियत हैं। वह जाने-माने राजनीतिक अर्थशास्त्री, लेखक और सामाजिक टिप्पणीकार हैं। उन्हें संजीदगी से पढ़ा और सुना जाता है।उन्होंने जेएनयू, दिल्ली और लंदन स्कूल ऑफ इकोनामिक्स में अध्ययन किया, सन 2014 से 2018 के दरम्यां आंध्रप्रदेश सरकार के काबीना मंत्री का दर्जाप्राप्त संचार सलाहकार रहे और संप्रति हैदराबाद के राइटफोलियो नामक थिंकटैंक के एमडी हैं। 'मिडवीक मैटर्स' उनका लोकप्रिय और प्रतिष्ठित यू ट्यूबचैनल है और वे अपने सुरोकारों के कारण उत्सुकता से सुने जाते हैं। उनकीपत्नी श्रीमती निर्मला सीतारमण भारत की विदेश मंत्री हैं और बेटी परकालावांग्मयी पत्रकार।

इन्हीं परकाला प्रभाकर की अंग्रेजीमें एक किताब आई थी -'द क्रुक्ड टिंबर ऑफ न्यू इंडिया। किताबों के शनैःशनैः विलोपित होने के इस दौर में इस किताब की एक साल में 12 हजार प्रतियांबिकी थीं। कह सकते हैं कि इसे लोगों ने हाथों-हाथ लिया था। इसी किताब काहिन्दी अनुवाद हिन्दी के अग्रणी प्रकाशन राजकमल ने 'नये भारत की दीमक लगीशहतीरें' शीर्षक से गत वर्ष छापा है। समकाल के ज्वलंत मुद्दों और प्रसंगोंसे जुड़ी इस दास्तावेजी कृति का अनुवाद किया है जेएनयू में ही शिक्षितवरिष्ठ और सचेत मीडियाकर्मी व्यालोक पाठक ने।

किताबमें संकलित संकटग्रस्त गणराज्य के आलेखों से गुजरना आधुनिक कालखंड् केगुजिश्ता बरसों और वर्तमान दौर से गुजरना है। यह इस पेचीदा और लगभग अनसोचेसमय की गलियों, सड़कों और कुल्हियों, ढलानों और चढ़ाइयों, खंड् और शिखरों औरराजमार्गों से गुजरना तो है ही, इसमें आगत और अनागत समय की आहटों को बूझने की कोशिश इस बेबाक अंदाज में की गयी है कि सचेत पाठक उन्हें सुन सकता है।करीब ढाई सौ पन्नों की यह किताब हमारे वक्त के पड़ताल की निर्भीक और ईमानदार कोशिश है। बड़ी बात यह है कि परकाला के शब्दकोश में डर या हिचक जैसा कोईशब्द नहीं है। वैसे परकालाकी शख्सियत को जानने के लिये संजय बारू की साढ़े पांच पेज की प्रस्तावना बड़ी सूचनाप्रद और प्रभावी है। यह किताब यूं भी सत्य और सत्ता के द्वंद्व काकथानक है। यह किताब सत्ता तक सत्य पहुंचाने की, बिना किसी झिझक या पछतावे के कोशिश का नतीजा है। यहां हमें बरबस महात्मा गांधी याद आते हैं जो दोनों बांह उठाकर न सिर्फ 'सत्य ही ईश्वर है' कहते हैं, बल्कि विश्व इतिहास मेंसत्य की लाठी से धरती को मुक्ति की ओर ठेलने का अपूर्व और क्रांतिकारी यत्नभी करते हैं। बहरहाल, बारू सगर्व कहते हैं कि प्रभाकर का लेखन हैदराबाद स निकला है और इसे देश-दुनिया के उन लोगों को जरूर पढ़ना चाहिये, जो भारत केवर्तमान को लेकर चिंतित हैं और भविष्य को लेकर गंभीर। क्या यह कथन हैदराबाद की शान और महत्ता को नहीं बढ़ाता है?

किताब काप्रारंभ ख्यात दार्शनिक इमैनुअल कांट के उद्धहरण 'मानवता की सड़ी हुई शहतीरों में कोई भी सीधी वस्तु कभी नहीं बनी' से होता है। शीर्षक इसी उद्धरण से ग्रहीत है और बरबस कंटेंट का आभास भी देता है। अपने 22 विषयों पर एकाग्र आलेखों में परकाला शहतीरों में दीमकें लगने की कहानी को परत दर परतबयां करते हैं और शहतीरों के संभावित हश्र के बारे में आगाह करते हैं। इन आलेखों का साझा-प्रस्थन बिन्दु है- भारत का वह विनाशकारी झुकाव, जो इसे बेहद कम धर्मनिरपेक्ष, कम उदारवादी, कम बहुलतावादी, कम प्रजातांत्रिकगण राज्य बनाने पर आमादा है। लेखक की चिंता और आलेखों का प्राथमिक विषय हैकि हमारे असाधारण गणराज्य के आधारभूत मूल्य खतरे में हैं। लेकिन आशा का यह तृण अभी शेष है कि नये भारत के दावानल ने अभी सब कुछ नहीं लील लिया है।

परकाला के विश्लेषण, व्याख्याओं और तर्कों से तो यही लगता है। वह भाजपा के उदय और महाविस्तार, भाजपा और आरएसएस के अंतर्सम्बंधों, आरएसएस की मजबूत मौजूदगी और उसकेअपरिवर्तनीय सोच, आबादी के मसले और टीआरएफ, भारत में धर्म सहिष्णुता औरअलगाव पर प्यू की रपट, हिंदू-हिन्दी-हिन्दुस्तान के रूपक, हिंदू होने और भारतीय होने के घालमेल, मोदी संप्रदाय (कल्ट) विरसे की छापामारी, उच्चशिक्षा के अंधकारमय परिदृश्य, जेएनयू आदि की बातें करते हैं। वह मुद्देवार चीजों को टटोलते, उघाड़ते और रेशा-रेशा सामने रखते हैं। ये मुद्दे हैं -हिजाब, बनाम भगवा पटका, विजाग स्टील संयंत्र, फादर स्टेन स्वामी की हत्या, कृषि-कानून, लखीमपुर खीरी-काण्ड, कोविड-प्रकोप आदि। खरगोश और बत्तख के भ्रमके बहाने भाजपा आरएसएस की अंतर्सम्बंधों पर उनका आलेख विचारोत्तेजक है।राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ पर एकाग्र उनका अगला आलेख इसी की अगली कड़ी है और आरएसएस के असली चेहरे की तस्दीक करता है। वह इस प्रश्न से भी जूझते हैं कि मोदी-शाह युगल का हश्र वैसा होने की संभावना क्यों नहीं है, जैसा सन् 2004 में वाजपेयी-नीत राजग सरकार का हुआ था? परकाला की मान्यता है कि मौजूदा सरकार को ताकत उनके प्रदर्शन नहीं, अपितु भावाकुल विभाजनकारी एजेंडे से मिल रही है। लोगों के लिये विकास नहीं, वरन 'उन लोगों को सबक सिखा दिया' ही असल मुद्दा है।

परकाला ने अपनी विचारोत्तेजक शाब्दिक प्रस्तुतियों का समापन जोसेफ स्तालिन केबारे में नीना पाब्ले जोवा के इस कथन से किया है - वह बाल्कनी में खड़ा होता है और झूठ बोलता है। हर व्यक्ति ताली बजाता है, पर हरेक आदमी जानता है कि वह झूठ बोल रहा है और वह जानता है कि हम जान रहे हैं। फिर भी वह लगातार झूठ बोलता है और खुश है कि हर कोई ताली बजा रहा है। परकाला की खरी-खरी कोसमेटती इस किताब पर बातों के क्रम में प्रसंगवश कहना जरूरी है कि व्यालोक पाठक का अनुवाद उनकी दक्षता का परिचायक है। परकाला के आलेखों को पढ़ते हुये फैज़ की पंक्तियां बरबस याद आती हैं - 'बोल कि लब आजाद हैं तेरे, बोल जुबांअब तक तेरी है।'

कुल: ध्वस्त होते राजघरानों का भाष्य करती सीरीज

वेब सीरीज समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक हैं)

'कुल' का अर्थ होता है वंश और प्रायः कुल का उल्लेख संभ्रांत वंश के लिये होता है और राजघराने इसी श्रेणी में आते हैं। ऐसे ही राजघरानों में से एक के ध्वस्त होने की तथा-कथा का भाष्य करती है निर्माता-निर्देशक साहिल रज़ा की वेबसिरीज़ -'कुल' । इन दिनों फिल्मों और वेबसिरीज़ के अच्छे खासे हिन्दी नाम में अंग्रेजी का तड़का लगाने का ऐसा शौक है कि लगता है हम किसी अंग्रेजी फिल्म का हिन्दी संस्करण देख रहे हैं । कुल के साथ भी ऐसा ही है । इसे नाम दिया गया है - ' कुल - द लिगेसी ऑफ रायसिंग्ज़ा ' । इस अँग्रेजी सब हेडिंग के अनुसार ही यह बीकानेर के महाराजा रायसिंह की कहानी है।

बीकानेर अपनी शाही शान-शौकत और मनमोहक खूबसूरती के लिये जाना जाता है ।कहानी के अनुसार बीकानेर महाराज रायसिंह का परिवार अन्दर ही अन्दर विश्वासघात और बरसों पुराने घावों से जूझ रहा है। इस घराने के गौरवशाली विरासत के पीछे सिंहासन पाने की लालसा भी है । अतीत का अन्धेरा है, जिसमें कई राज़ छिपे हैं। कहानी में राजा चंद्रप्रताप रायसिंह (राहुल वोहरा) हैं, जो अपने शाही वैभव के बावजूद दिवालियापन से जूझ रहे हैं। उनका एक पुत्र और दो पुत्रियां हैं । बेहद वफादार इंद्राणी (निमरत कौर), महत्वाकांक्षी काव्या (रिद्धि डोगरा) और परेशान अभिमन्यु (अमोल पाराशर) - अपने पिता की संदिग्ध परिस्थितियों में मृत्यु होने पर परिवार की छिपी हुई कलह बाहर आती है। वारिस बनने की चाह, धोखे और पुराने रहस्यों के खुलासे से शाही परिवार बिखरने लगता है। चंद्रप्रताप का नाजायज बेटा बृज (गौरव अरोड़ा), पहले से ही कमजोर इस परिवार में तनाव बढ़ाने का काम करता है।

साहिर रजा के निर्देशन में बनी आठ-एपीसोड की यह सिरीज एक अव्यवस्थित परिवार में साजिशों के साथ शुरू होती है। देखते ही देखते हालात अराजक हो जाते हैं। हालांकि आधे-आधे घण्टे के एपीसोड बड़ी तेजी से आगे बढ़ते हैं, लेकिन कहानी कई मायनों में असंगत लगती है। भिन्न-भिन्न चरित्रों की अपनी निजी कहानियां, मुख्य कहानी से पूरी तरह जुड़ नहीं पाती हैं,और इसीसे सिरीज़ देखते हुए दर्शक इन चरित्रों से जुड़ नहीं पाते हैं। 'कुल' में पीढ़ी-दर-पीढ़ी मिले धोखे और वफादारी जैसे विषयों को छुआ तो गया है, लेकिन कहानी कहने का तरीका बेहद सतही है।

अभिनय का जहाँ तक सवाल है सभी कलाकार अपने चरित्रों से तादात्म्य बैठाने के लिये संकल्पित नज़र आते हैं, लेकिन पटकथा की कमियां इन्हें जमने का मौका नहीं देती है। निमरत कौर ने इंद्राणी के रूप में एक दमदार उपस्थिति दर्ज कराई है, जो चुप रहकर अपनी ताकत दिखाने की कला में माहिर है। रिद्धि डोगरा ने काव्या के रोल में एक ऐसी महिला का चरित्र निभाया है, जो एक बार फैसला कर ले तो उसे पूरा करके ही मानती है। अभिमन्यु के रूप में अमोल पाराशर की भूमिका वही पुराने साँचे में ढली हुई लगती है। एक अस्थिर उत्तराधिकारी के रोल में उन्हें देखकर सहानुभूति की बजाय तनाव ज्यादा होता है। गौरव अरोड़ा (बृज) और सुहास आहूजा (इंद्राणी के पति, विक्रम) ने अच्छा काम किया है। लेकिन उनके चरित्रों को ज्यादा मौके नहीं मिले हैं। रोहित तिवारी भी एक मास्टरमाइण्ड सीएम जोगराज के रुप में छाप छोड़ते हैं।

एकता कपूर और शोभा कपूर ने 'कुल' को? बनाया है। इसमें एक ताकतवर शाही परिवार की कहानी वाले सारे तत्व हैं, लेकिन फिर भी यह एक ऐसी सिरीज बनकर रह गई है, जो आधे-अधूरे मन से लिखी गई लगती है। पैसे और पावर की इस लड़ाई में कौन से रायसिंह को वारिस चुना जाएगा? यह जानने की दिलचस्पी तो बढ़ती है, लेकिन अंत मेंबर कई कमियां भी सामने आती है । इन कमियों की वजह से यह दर्शकों से जुड़ नहीं पाती। इसे न तो पूरी तरह से बेकार कहा जा सकता है और ना ही एक बेहतरीन सीरीज। यह 'औसत' बनकर रह जाती है।

वैसे देखने के लिहाज से। यह एक रोचक सिरीज है। प्रोडक्शन वैल्यू में कोई कमी नहीं है। शाही अंदाज और इसके पीछे के फीकेपन को परदे पर बखूबी उकेरा गया है।

भव्य महल से पारम्परिक कपड़ों तक, यह सिरीज दर्शकों को अपनी दुनिया में डुबोने का हुनर रखती है। लेकिन अफसोस कि परदे पर इसकी खूबसरत मौजूदगी पटकथा की कमियों को छिपा नहीं पाती है। ऐसा लगता है कि यह जल्दबाजी में बनाई गई है। जैसे-जैसे कहानी आगे बढ़ती है, नए ट्विस्ट आते हैं। लेकिन इनमें से कई ऐसे हैं, जिन पर विश्वास डगमगाता भी है।

कविता

जिए जाते हैं...

पंकज त्रिवेदी

मेरे दर्द के कतरे कतरे से जो हर्फ़ उभरता है
मैं क्या कहूं वो आपके दिल में उतर जाते हैं।

जब ज़िंदगी हमसे बहुत खेल खेलने लगती है
तन्हाई प्रियतमा और दर्द ही दोस्त हो जाते हैं।

जिसने दर्द दिए हमने न कहा, सहे, चुप ही रहें
मरहम के नाम ज़ख्म कुरेदकर सहला जाते हैं।

न पूछो कुछ कह दिया तो वो गद्दार ही कहेंगे
दर्द के दम अब सुकूँ-ए-मोहब्बत जीए जाते है।

कविता

कमलेश कुमार दीवान

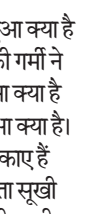

गुलमोहर

गुलमोहर खिल उठे,हुआ क्या है
शुष्क मौसम हवा की गर्मी ने
शाख पत्ते तना ,छुआ क्या है
गुलमोहर आपको हुआ क्या है।
पेड़ मुरझाए सर झुकाए हैं
दूब धरती लगी ,लता सूखी
डाली डाली हुई बड़ी रूखी
बहुत उबी हुई बहारें है
कहर बरपाती सी बयारे हैं
टुकड़ों टुकड़ों में टूटते बादल
रूठी रूठी दिखी फुहारें है
दरकी धरती है बाग सूना सा ,
बागबां चुप हैं दुःख है दूना सा
न बोलती है चिरैया, तितलियां भी गुम
फूल तो फूल हैं रंग भी तो दिए उसने
बिछ गए सिजदा में दुआ की है किसने
हमने फूलों को कब दिया क्या है?
गुलमोहर खिल उठे, हुआ क्या है?

नेशनल लोक अदालत में सुलझे 45 पारिवारिक विवाद

बैतूल। नेशनल लोक अदालत में कुटुंब न्यायालय ने 45 जोड़ों के पारिवारिक विवाद का समाधान किया। कुटुंब न्यायालय में प्रधान न्यायाधीश शिवबालक साहू ने जोड़ों की काउंसलिंग की। इनमें सामाजिक रीति से विवाह करने वाले और प्रेम विवाह करने वाले जोड़े शामिल थे। जिला न्यायाधीश दिनेश चंद्र थपलियाल और शिवबालक साहू ने कहा कि पति-पत्नी को एक करना ईश्वरीय कार्य है। कुटुंब न्यायालय में आज समझौते के लिए 68 प्रकरण रखे गए थे। नेशनल लोक अदालत में 26 खंडपीठों का गठन किया गया है। इनमें सिविल, आपराधिक, चेक बाउंस, धन वसूली, मोटर दुर्घटना, श्रम विवाद, विद्युत चोरी, वैवाहिक मामले और भूमि अधिग्रहण संबंधी मामलों की सुनवाई की गई।

मुलताई को नहीं मिली नागपुर-गया स्पेशल ट्रेन

स्थानीय लोगों ने जताया विरोध

बैतूल। मध्य रेलवे ने गर्मी की छुट्टियों के लिए नागपुर-गया के बीच स्पेशल ट्रेन शुरू की है। ट्रेन को मध्यप्रदेश में पांढुर्ना, आमला, बैतूल, इटारसी, जबलपुर और सतना स्टेशनों पर रोका जाएगा। मुलताई स्टेशन को स्टॉपेज नहीं दिया गया है। जन आंदोलन मंच के नेता अनिल सोनी ने कहा कि केंद्रीय राज्य मंत्री और सांसद डीडी उइके ने मुलताई में ट्रेनों के स्टॉपेज के लिए कोई प्रयास नहीं किया।

स्थानीय निवासी पवन पाटेकर और सौरभ कड़वे ने बताया कि मुलताई से बड़ी संख्या में यात्री इन मार्गों पर सफर करते हैं। अनिल सोनी ने बताया कि नागपुर से ट्रेन 10 मई को शाम 3.40 बजे रवाना होगी। यह 11 मई को दोपहर 11.45 बजे गया पहुंचेगी। वापसी में ट्रेन 13 मई को रात 8.30 बजे गया से चलेगी। यह 15 मई को शाम 3.50 बजे नागपुर पहुंचेगी। ट्रेन में 18 डिब्बे हैं। जिनमें 2 लगेज-कम-गार्ड वैन, 6 सामान्य श्रेणी, 5 स्लीपर, 4 तृतीय वातानुकूलित और 1 द्वितीय वातानुकूलित कोच हैं। टिकट बुकिंग सभी पीआरएस केंद्रों और ऑनलाइन उपलब्ध है। मुलताई के लोग लंबे समय से प्रमुख ट्रेनों के ठहराव की मांग कर रहे हैं। इससे विद्यार्थियों, नौकरीपेशा लोगों और व्यापारियों को यात्रा में सुविधा मिलेगी। आमला और बैतूल का स्टॉपेज मिलने के बाद भी मुलताई की उपेक्षा से स्थानीय लोगों में आक्रोश है। जन आंदोलन मंच ने चेतावनी दी है कि अगर प्रशासन ने जल्द ध्यान नहीं दिया तो आंदोलन किया जाएगा।

फर्जी रजिस्ट्री मामले में आरोपी गिरफ्तार

बैतूल। पुलिस ने जमीन की धोखाधड़ी के एक मामले में आरोपी गुलाब उर्फ पिंटू उघड़े को गिरफ्तार किया है। आरोपी ने अपने साथियों के साथ मिलकर एक बुजुर्ग से जमीन के सौदे में धोखाधड़ी की थी। मामला 17 फरवरी 2025 का है। झल्लार निवासी 70 वर्षीय मेघराज प्रजापति ने कोतवाली थाने में शिकायत दर्ज कराई थी। शिकायत में बताया था कि उमेश पवार, संदीप वर्मा, गुलाब उर्फ पिंटू उघड़े, नवीन साहू, सरिता राठौर और सुरेश राठौर ने उनके

साथ धोखाधड़ी की। आरोपियों ने एक जमीन का सौदा कर दूसरी जमीन की रजिस्ट्री करवा ली। पुलिस अधीक्षक निश्चल एन. झारिया के निर्देश पर पुलिस टीम ने मामले की जांच शुरू की। पहले ही सरिता राठौर, सुरेश राठौर और नवीन साहू को गिरफ्तार किया जा चुका था। वहीं मुखबिर की सूचना पर 35 वर्षीय गुलाब उर्फ पिंटू उघड़े को भी पकड़ लिया गया। आरोपी रानीपुर रोड, भिलवाटेक गौठाना का रहने वाला है। इस मामले के दो आरोपी अभी भी फरार हैं। पुलिस उनकी तलाश कर रही है। आरोपियों ने 70 वर्षीय मेघराज से दो जमीनों का सौदा किया। रजिस्ट्री के लिए उनके दस्तावेज बनाए गए। इनमें रजिस्ट्री की गई जमीन करोड़ों रु कीमत की थी।उसे कम कीमत की जमीन बताकर वृद्ध से रजिस्ट्रार के सामने हस्ताक्षर करवा लिए गए। इस धोखाधड़ी का परिजनों को पता चलने पर कलेक्ट्रेट के पास जमकर हंगामा भी हो चुका है।

कल धूमधाम से मनाई जाएगी बुद्ध जयंती, होंगे अनेक कार्यक्रम

बैतूल। बुद्ध विहार प्रबंध समिति व आम्रपाली महिला मंडल के तत्वाधान में बुद्ध विहार कालापाठा में भगवान बुद्ध जयंती कल सोमवार को शाम 5 बजे मनाई जाएगी। समिति सचिव एमएल पाटील ने बताया कि पूज्य भंते दिपांकर द्वारा ध्यान परित्राण पाठ, बुद्ध वंदना एवं धम्म देशना आयोजित की जाएगी व अंत में प्रसादी वितरण किया जाएगा। सीएल डोंगरे, सी नागले, पीएल खातरकर, भाउराव पाटील, गीता नागले, शीला गुलबांके, कांति डोंगरे, एसआर कापसे, माला खातरकर, सुनीता गायकवाड़ ने सभी से उपस्थित होने का आग्रह किया है।

पोल व ट्रांसफार्मर लगाने की एनओसी नहीं लेने पर नपा, बिजली कंपनी पर लगायेगी जुर्माना

नगरपालिका सडक़ों पर बिना अनुमति लगाए गए बिजली पोलों एवं ट्रांसफार्मर का कर रही सर्वे

संजय द्विवेदी, बैतूल। शहर में बिजली सप्लाई करने के लिए बिजली विभाग ने सड़क किनारे बिजली पोल और ट्रांसफार्मर तो लगा दिये है, लेकिन इसकी नगरपालिका से अनुमति नहीं ली है। ऐसे बिजली पोलों की नगरपालिका अब जांच करवा सर्वे करवा रही है, सर्वे के बाद बिजली कंपनी को नोटिस जारी कर जुर्माना लगाया जायेगा। दरअसल शहरी क्षेत्र में सडक़ों के किनारे ऐसे कई विद्युत पोल और ट्रांसफार्मर लगाए गए हैं जिन्हें लगाने की परमिशन बिजली कंपनी ने नगरपालिका से नहीं ली है। नपा से बिना एनओसी लिए ही पोल लगा दिए गए हैं। जिससे भविष्य में सड़क चौड़ीकरण के दौरान पोल शिपटिंग कराने पर उल्टे नगरपालिका को भारी भरकम राशि खर्च करना पड़ती है। पूर्व में ऐसे कई मामले सामने आए हैं, जिनमें विद्युत कंपनी ने मनमर्जी से कहीं भी पोल खडे कर दिए। बाद में उन्हें हटाने के लिए बिजली विभाग को कहा गया, तो सुपरविजन चार्ज, स्क्रैप सहित पोल शिपटिंग की पूरी राशि वसूल की गई।

सड़क चौड़ीकरण में आड़े आ रहे बिजली पोल- बस स्टैंड से कोतवाली चौक तक सड़क का चौड़ीकरण कार्य हो रहा है। इस कार्य में भी सड़क के किनारे लगे बिजली पोल एवं ट्रांसफार्मर की वजह से काम में तेजी नहीं आ पा रही है। कोठीबाजार रोड पर कई सालों पहले सड़क के बिल्कुल किनारे ही विद्युत पोल और ट्रांसफार्मर लगा दिए थे, लेकिन अब सड़क चौड़ीकरण का काम कराया जा रहा है तो उसको हटाने में भारी मशक्कत करनी पड़ रही है। गौरतलब है कि शहर में बहुत से बैंक एवं नए बने हुए मॉल के लिए शहर की स?कों के बिल्कुल किनारे से पोल एवं ट्रांसफार्मर

बिजली विभाग द्वारा बिना नपा से एनओसी लिए लगा दिए गए है। भविष्य में सडक़ का चौड़ीकरण कार्य होने पर इन्हें हटाने के लिए नगरपालिका को अच्छी खासी मशक्कत करना पड़ती है। साथ ही आर्थिक नुकसान भी उठाना पड़ता है। जानकारों के अनुसार नगरपालिका को एक ट्रांसफार्मर हटाने के लिए लगभग तीन से साड़े तीन लाख रूपये वहन करना पडता है तो वहीं एक बिजली पोल हटाने में पच्चीस से तीस हजार रूपये तक खर्च करना पड़ता है, साथ ही पांच प्रतिशत सुपरविजन चार्ज भी देना पडता है। इस प्रकार देखा जाए तो इससे नगरपालिका के सडक़ निर्माण कार्य में लेटलतीफी होती है और नपा का कार्य पिछड़ जाता है।

बिना एनओसी लगे बिजली पोल और ट्रांसफार्मर का सर्वे- नगरपालिका, बिजली कंपनी द्वारा बिना एनओसी मनमर्जी से लगाए गए बिजली पोल और ट्रांसफार्मर का सर्वे करा रही है ताकि बिजली कंपनी पर पेनाल्टी लगाई जा सके। बिजली विभाग ने द्वारा बिना एनओसी लिए ही सड़कों के किनारे पोल लगाने से भविष्य में जब नगरपालिका द्वारा सड़क चौड़ीकरण का कार्य करवाया जाता है तो पोल शिफ्टिंग के नाम पर विद्युत कंपनी द्वारा उल्टे नपा से राशि की डिमांड की जाती है। उदाहरण बतौर बिजली विभाग ने नगरपालिका के ठीक सामने भी सडक के किनारे पोल और ट्रांसफार्मर लगा दिएं। हालांकि बाद में नपा की आपत्ति के चलते इस पोल से अभी तक कनेक्शन चालू नहीं किया है। इसके अलावा जिला जेल के सामने भी रोड के बिल्कुल किनारे से सीटीसी द्वारा ट्रांसफार्मर लगा दिया गया। वहीं गुरुद्वारा रोड पर भी रिलायंस स्मार्ट बाजार मॉल के लिए रोड के बिल्कुल किनारे से ट्रांसफार्मर लगाया है।

नपा परिषद की बैठक में लिए गए निर्णय पर अमल नहीं - पोल शिफ्टिंग और पोल लगाए जाने को लेकर नगरपालिका को हर साल लाखों रुपए खर्च करना पडता है। इसे देखते हुए पिछले दिनों नगर पालिका परिषद बैतूल की बैठक में एक प्रस्ताव पास किया गया था। जिसमें निर्णय लिया गया था कि यदि विद्युत वितरण कंपनी द्वारा शहर में कहीं भी विद्युत पोल या ट्रांसफार्मर लगाए जाते हैं तो पहले नगरपालिका से एनओसी ली जाए, उसके बाद ही पोल लगाने का काम शुरू किया जाए, लेकिन इस आदेश का पालन विद्युत कंपनी द्वारा नहीं किया जा रहा है। अब नगरपालिका ऐसे पोल एवं ट्रांसफार्मर का सर्वे करवाकर उन पर पेनाल्टी लगाने वाली है। इसके लिए बिजली विभाग को नगरपालिका ने पत्र भी भेजा था, जिसका बिजली विभाग द्वारा आज तक कोई जवाब नहीं दिया गया।

इनका कहना है -

बिजली विभाग द्वारा बिना नगरपालिका की एनओसी लिये बिजली पोल एवं ट्रांसफार्मर लगा दिये गये है। जिसका अभी सर्वे कराया जा रहा है, जिसके बाद नपा परिषद की बैठक में लिये गये निर्णयानुसार पेनल्टी लगाई जायेगी। इसके लिये नगरपालिका ने बिजली विभाग को पत्र भी लिखा है।

- सतीश मटसेनिया,
सीएमओ, नगरपालिका बैतूल

विश्व मंगल कामना के साथ संपन्न हुई श्रीमद् भागवत कथा

जो धर्म की रक्षा करेगा धर्म उसकी रक्षा करेगा-अपर्णा किशोरी

बैतूल। मां ताप्ती के तट पर बसे ग्राम धनौरा में चल रही संगीतमय में श्री भागवत कथा के कथा का समापन शनिवार को हुआ। इस अवसर पर अपने प्रवचन में अपर्णा किशोरी मां ताप्ती पर विस्तृत महत्व से श्रोताओं को अवगत कराते हुए कहा कि अत्यंत सौभाग्य से भारत भूमि में जन्म होता है और उसके साथ-साथ हिंदू धर्म में और यहां के क्षेत्रवासी अत्यंत भाग्यशाली हैं जिन्होने मां ताप्ती के पावन तट पर जन्म लिया। धर्म से जुड़े रहो जो धर्म की रक्षा करेगा धर्म उसकी रक्षा करेगा क्योंकि कलयुग में केवल ईश्वर का नाम ही ऐसा अमृत है जो कि हमें

इस कलयुग से भव सागर पार कर सकता है। उन्होने कहा कि कहीं ना कहीं गौ, गंगा, गायत्री यह सभी धर्म के एक मुख्य अंग है जिसे हमें बचाने की विशेष आवश्यकता है। और जब तक के धरती पर गौ, गंगा और गोवर्धन रहेंगे तब तक कलयुग का अपना प्रभाव नहीं पड़ेगा। इन्हीं सब बात को ध्यान में रखते हुए सत्कर्म करें, अच्छे विचार रखे, अच्छा कार्य करें। आयोजक पंडित अमित शर्मा, पंडित मुकुल बैरागी, पंडित नरेश शर्मा व आयोजक समस्त कावडकर परिवार, ग्राम धनोरा के नगरवासयों ने सभी के सहयोग के लिए आभार व्यक्त किया। समापन अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं ने भोजन प्रसादी ग्रहण की।

बोरदेही मंडल के दो दर्जन लोगों ने थामा भाजपा का दामन

केन्द्रीय मंत्री एवं संभागीय संगठन प्रभारी ने विजय भवन में दिलाई सदस्यता

बैतूल/आमला। भाजपा की रीति-नीति, नेतृत्व से प्रभावित होकर आमला विधानसभा के बोरदेही मंडल में लगभग दो दर्जन युवाओं ने भाजपा कार्यालय विजय भवन पहुंचकर भाजपा का दामन थामा। इस दौरान केंद्रीय राज्यमंत्री और सांसद दुर्गादास उइके, संभागीय संगठन प्रभारी पंकज जोशी, भाजपा जिलाध्यक्ष सुधाकर पवार, आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे, मुलताई विधायक चंद्रशेखर देशमुख, घोड़ाडोंगरी विधायक गंगा उइके मंडल अध्यक्ष यशवंत यादव की उपस्थिति में भाजपा का दामन थामा। केन्द्रीय मंत्री व सांसद दुर्गादास उइके व पंकज जोशी ने युवाओं को पार्टी का अंगवस्त्र पहनाकर सदस्यता दिलाई। इस अवसर पर श्री उइके ने कहा कि आज का भारत दुश्मन को घर में घूस कर मारने वाला भारत है जिसका नेतृत्व प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कर रहे है। भाजपा परिवार में आप सभी का स्वागत है। वहीं पंकज जोशी ने कहा कि राष्ट्र प्रथम की भावना लेकर संगठन में लोग जुडते है। भाजपा में कार्यकर्ता ही महत्वपूर्ण है अन्य राजनीतिक दलों में चरण वंदना चलती है। भाजपा भारत माता की वंदना पर विश्वास करती है। युवाओं को भाजपा से जोड़ने में सरपंचद्वय सचिन साहू हरन्या, लक्ष्मीनारायण साहू बोरदेही की विशेष भूमिका रही। भाजपा की सदस्यता लेने वालो में बंटी साहू, संतोष वंदेवार, बबलू उइके, कृष्णा पाटिल , रमेश पवार, प्रशांत साहू, रवि उइके,

जुगल टिटवारे, विक्की चौकीकर, दुर्गेश सलामे, रामप्रसाद साहू, कपिल सोनी, रिंकू सोनी, अनिल यदुवंशी, राजेश नागले, निखिल साहू, सुभाष साहू, हरिदास साहू, सतीश साहू, विनोद उइके और दीपक यदुवंशी प्रमुख है। इस अवसर पर जिला उपाध्यक्ष नरेन्द्र गढेकर,महामंत्री महेश मर्सकोले सतीश साहू, शैलेन्द्र यादव सहित बडी संख्या में पार्टी पदाधिकारी मौजूद रहे।

भारत अधिक बने समृद्धशाली, यज्ञ में छोड़ी आहुतियां

सुबह सवेरे सोहागपुर । हालांकि भारत पाकिस्तान में युद्ध विराम हो गया है। लेकिन शिव पार्वती मंदिर परिसर में चल रहे श्री लक्ष्मीनारायण महायज्ञ में भारत अधिक समृद्धशाली बनने को लेकर यज्ञ आचार्य पंडित विकास शर्मा ने यज्ञ में यजमानों से आहुतियां छुड़वाई।यज्ञ नारायण समिति के अधिवक्ता शिव कुमार पटेल ने बताया श्री लक्ष्मीनारायण यज्ञ में दश महाविद्याओं एवं अघोर महामंत्र के नाम से अत्यंत प्रभावशाली दिव्य आहुतियां छोड़ी गई।जिसमें मुख्य यजमान धन सिंह रघुवंशी,अधिवक्ता शिव कुमार पटेल,सुरेश राघुवंशी,राजकुमार पाल यज्ञ आचार्य विकास शर्मा, उप आचार्य पंडित मनीष उपाध्याय,अरविंद सहरिया, पंडित राघवेंद्र शास्त्री, पंडित अतुल कृष्ण शास्त्री, पंडित सत्येंद्र पांडे, पंडित नमनकांत शर्मा, पंडित मोहित पांडे,शिवम तिवारी ,सचिन तिवारी, गोपाल द्विवेदी ,प्रशांत त्रिपाठी आदि अनेकों ब्राह्मण उपस्थित थे।कल यज्ञ की पूर्णाहुति होगी।

वन विभाग के कर्मचारियों और प्रशिक्षुओं ने किया रक्तदान

वन विद्यालय बैतूल में वृत्त स्तरीय शिविर का आयोजन

बैतूल। वन विद्यालय बैतूल में स्वास्थ्य विभाग बैतूल की टीम के सहयोग से 10 मई को वृत्त स्तरीय रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर का उद्घाटन सीसीएफ सुश्री बासु कनौजिया ने किया। कार्यक्रम में डीएफओ दक्षिण बैतूल विजयानंतम टी आर, डीएफओ पश्चिम

बैतूल वरुण यादव और उपवनमंडलाधिकारी वन विद्यालय बैतूल अमित खन्ना ने स्वयं रक्तदान कर कर्मचारियों और प्रशिक्षुओं का हौसला बढ़ाया। शिविर में वन वृत बैतूल, सामाजिक वानिकी वृत बैतूल, कार्य आयोजना इकाई बैतूल, वनमंडल उत्तर, दक्षिण, पश्चिम, उत्पादन एवं रामपुर भतोडी परियोजना, बैतूल के अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया। सुबह 11 बजे से शाम 5 बजे तक चले इस रक्तदान शिविर में कर्मचारियों ने सेवा भावना के साथ बढ़-चढक़र हिस्सा लिया और जरूरतमंदों के जीवन बचाने के उद्देश्य से रक्तदान किया। शिविर का उद्देश्य रक्तदान के प्रति जागरूकता बढ़ाना और रक्त की कमी से जूझ रहे मरीजों की सहायता करना था। इस अवसर पर अधिकारियों ने कहा कि रक्तदान एक ऐसी महान सेवा है जो जरूरतमंदों की जान बचाने के साथ समाज में एकता और सद्भावना का संदेश भी देती है।

झूठे मामलों से प्रताड़ित शिक्षिका ने कलेक्ट्रेट पहुंचकर की शिकायत

पूर्व में भी कई बार कलेक्टर, एसपी से शिकायत के बाद भी नहीं मिल रहा न्याय

बैतूल। भयावाडी की शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में पदस्थ शिक्षिका श्रीमती लीना रायकवार ने कलेक्टर बैतूल को आवेदन सौंपकर न्याय की गुहार लगाई है। उन्होंने बताया कि वे पिछले 10 से 15 वर्षों से इस विद्यालय में कार्यरत हैं और उनके पति अनिल कुमार रायकवार तथा पुत्री के साथ ग्राम भयावाड़ी में निवास कर रही हैं। उन्होंने प्रशासन पर आरोप लगाया कि कई बार शिकायत करने के बावजूद अब तक विरोधियों पर कोई कार्रवाई नहीं हुई है, जिससे वे मानसिक रूप से प्रताड़ित हो रही हैं। श्रीमती लीना रायकवार ने बताया कि उन्होंने 6 नवंबर 2023 से लेकर आज तक कलेक्टर कार्यालय और पुलिस अधीक्षक बैतूल को कई आवेदन प्रस्तुत किए हैं। इन आवेदनों में उन्होंने अनावेदक आकाश, संदीप, दिलीप और इनके अन्य सहयोगियों के खिलाफ कार्यवाही की मांग की थी,

लेकिन प्रशासन की चुप्पी के कारण अब इन लोगों के हौसले बढ़ते जा रहे हैं। आरोप है कि इन लोगों द्वारा उन्हें और उनके पति को लगातार झूठे प्रकरणों में फंसाने की साजिश रची जा रही है और आए दिन मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जा रहा है। उन्होंने संलग्न दस्तावेजों के साथ यह भी बताया कि उनके विरुद्ध झूठी शिकायत दर्ज कराई गई हैं जिससे उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा को ठेस पहुंची है। श्रीमती रायकवार ने कलेक्टर से निवेदन किया है कि वे उनके द्वारा प्रस्तुत सभी आवेदनों का गंभीरता से अवलोकन कर जांच करवाएं और दोषियों पर सख्त कार्रवाई करें, ताकि उन्हें और उनके परिवार को न्याय मिल सके।

जिले में प्रतिबंध के बावजूद अवैध बोरवेल करते दो मशीनें जब्त

बैतूल। मध्यप्रदेश पेयजल परिरक्षण अधिनियम 1986 के अंतर्गत लगाए गए प्रतिबंध के बावजूद बैतूल जिले में अवैध रूप से नलकूप खनन का मामला सामने आया है। प्राप्त जानकारी के अनुसार एसडीएम शाहपुर डॉ.अभिजीत सिंह को घोड़ाडोंगरी तहसील के ग्राम धरमपुर में एक खेत में रात के समय अवैध बोरिंग किए जाने की सूचना प्राप्त हुई थी। एसडीएम शाहपुर के निर्देश पर नायब तहसीलदार चोपना प्रेमसिंग दीवान ने किसान राकेश डे के खेत में बिना अनुमति के बोर खनन करते हुए दो बोरिंग मशीन जप्त की और थाना चोपना ले जाकर एफआईआर कराई है। कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी द्वारा जारी आदेश के अनुसार जिले में 1 अप्रैल 2025 से निजी नवीन नलकूप खनन पर पूर्ण प्रतिबंध लागू किया गया है। इसी आदेश का उल्लंघन करते हुए 8 मई को रात्रि लगभग 1 बजे राकेश डे पिता निमाई डे, निवासी ग्राम धरमपुर के खेत में दो बोरिंग मशीनें खड़ी पाई गईं। जांच के दौरान मशीनों के नंबर क्रमश- एमएच 27 डीएल 0892 एवं एमएच 27 बीएक्स 9255 पाए गए। दोनों मशीनों के मालिक जावेद कुरैशी, निवासी अमरावती महाराष्ट्र बताए गए हैं। मशीनों का संचालन प्रकाश श्रीवास पिता मनोहर श्रीवास निवासी बैतूल द्वारा किया जा रहा था।

एक्टर्स शादियों और पार्टियों में क्यों नाचें!

शादियों और पार्टियों में नाचने वाले 'भांड' को पहले सभ्य समाज में घुलने-मिलने की इजाजत नहीं थी? उन्हें अयोग्य माना जाता था। उन्हें ऐसे लोगों के रूप में देखा जाता था जिनकी कोई विचारधारा नहीं थी, उनका समाज पर बुरा प्रभाव था। उन्हें गांवों के बाहर टेंट में रखा जाता था और सिर्फ परफॉर्मेंस के वक्त गांव में एंट्री की इजाजत दी जाती थी।

इन दिनों नवाजुद्दीन सिद्दीकी जहां ओटीटी पर रिलीज अपनी फिल?म 'कॉस?ताव' को लेकर चर्चा में हैं। वहीं अपने हाल के इंटरव्यू में वे फिल्म इंडस्ट्री पर निशाना साधने से भी नहीं चूक रहे। उन्होंने एक बयान में बॉलीवुड पर 'चोरी' का आरोप लगाया। अब उन्होंने शादियों और प्राइवेट पार्टीज में पैसे लेकर परफॉर्म करने वाले एक्टर्स की तुलना 'भांड' से की है। हालांकि, नवाज ने यह भी कहा है कि वह इसे गलत नहीं मानते, क्योंकि उनके मुताबिक हर कलाकार भांड ही होता है।

अनुराग कश्यप की फिल्म 'देव डी' में नवाजुद्दीन सिद्दीकी एक गाने 'इमोशनल अत्याचार' में नजर आए थे। इसमें वह कुछ इसी अंदाज में एक कार्यक्रम में स्टेज पर डांस कर रहे थे और गाना गा रहे थे। एक्टर का कहना है कि इस गाने की शूटिंग के दौरान सेट पर उनका अनुभव अच?छा नहीं रहा था। अपनी बात आगे बढ़ाते हुए नवाजुद्दीन ने स्वीकार किया कि उन्हें अपने साथी बॉलीवुड एक?टर्स के भारी भरकम पैसे लेकर प्राइवेट पार्टी में नाचने से कोई समस्या नहीं है, बल्कि अगर वो भी ऐसा कर सकते तो जरूर करते।

नवाजुद्दीन सिद्दीकी ने यूट्यूब चैनल 'ऑल अबाउट ईव' से बातचीत में कहा कि कलाकार मूल रूप से 'भांड' (लोक मनोरंजन करने वाले) होते हैं, जिन्हें बीते दौर में सभ्य समाज के लिए फिट नहीं माना जाता था। नवाज से पूछा था गया कि या वे शादी में नाचना पसंद

करेंगे? इसी पर उन्होंने जवाब दिया कि हां, क्यों नहीं? इसमें क्या गलत है? यह हमारे पेशे का हिस्सा है। लोग शिकायत करते हैं कि एक?टर्स शादियों में नाचते हैं, लेकिन समस्या क्या है? आखिरकार, हम सभी 'भांड' हैं।

एक्टर ने कहा कि क्या आप जानते हैं कि पहले 'भांड' को सभ्य समाज में घुलने-मिलने की इजाजत नहीं थी? उन्हें अयोग्य माना जाता था। उन्हें ऐसे लोगों के रूप में देखा जाता था जिनकी कोई विचारधारा नहीं थी, उनका समाज पर बुरा प्रभाव था। उन्हें गांवों के बाहर टेंट में रखा जाता था और सिर्फ परफॉर्मेंस के वक्त गांव में एंट्री की इजाजत दी जाती थी। एक बार कार्यक्रम खत्म हुआ, तो उन्हें फिर वापस भेज दिया जाता था। नवाज ने कहा कि वक्त के साथ कलाकारों को लेकर चीजें इसलिए बदल गईं, एक?टर्स अब अमीर और सुसंस?कृत हैं। उन्होंने कहा कि जब लोग शादियों में नाचने के लिए उनसे सवाल करते हैं तो वह परेशान हो जाते हैं, लेकिन 'भांडगिरी' जारी रहती है।

कुछ साल पहले 'कॉफी विद करण' में रणवीर सिंह और अक्षय कुमार ने भी इस पर बात की थी। कहा था कि उन?हें निजी समारोहों में परफॉर्म करने को लेकर शर्मिंदगी महसूस नहीं होती। रणवीर का जि?क्र करते हुए अक्षय ने कहा था, 'यह आदमी शादियों से सबसे आखिर में निकलता है। शादी खत्म हो जाती है, दूल्हा और दुल्हन अपनी सुहागरात के लिए जाना चाहते हैं, लेकिन रणवीर तब भी नाच रहा होता है। ये सुबह 5 बजे तक नाचता है और जब जाने के लिए तैयार होता है, तब तक दूल्हा-दुल्हन भी बहुत थक चुके होते हैं।

रियल बॉक्स

फार्मूला सिनेमा के असर से यथार्थ सिनेमा बेअसर

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक है।

मनोरंजन सिर्फ मन बहलाव नहीं है, ये समाज का दिशा दर्शन भी करता है। लेकिन, समय के साथ-साथ ये दो हिस्सों में बंट गया। एक सिनेमा फार्मूला कहानियों पर गढ़ा जाता है, जो दर्शकों को मनगढंत कहानियों से बांधता है! दूसरा सिनेमा वो है, जो जीवन का यथार्थ दिखाता है, यानी समानांतर सिनेमा! दूसरी तरह की फ़िल्में कुछ ख़ास इसलिए होती हैं कि इनकी कहानियां हमें अपनी या अपने आसपास की लगती है। समानांतर फिल्मों में मुख्यतौर पर जमींदार या पूंजीपतियों द्वारा शोषण, अंधविश्वास और धार्मिक पाखंड पर चोट, युवा वर्ग के असंतोष, महिलाओं पर अत्याचार, भेदभाव जैसे कई सामाजिक मुद्दे दिखाई देते हैं। इनका समाज से सीधा सरोकार होता है। वास्तव में समानांतर सिनेमा को एक सांस्कृतिक आंदोलन की तरह देखा गया, जिसमें विषय की गंभीरता को यथार्थ और नैसर्गिकता के साथ जोड़कर रचा जाता है। ऐसी फिल्मों में हमेशा नए अंदाज से सामाजिक और राजनीतिक घटनाक्रमों को परदे पर उतारने की कोशिश की गई।

समानांतर सिनेमा को जीवन का यथार्थ कहा जरूर गया, लेकिन माना नहीं गया। क्योंकि, समानांतर सिनेमा का कैमरा हमेशा दमित और शोषित वर्ग पर ही फोकस होता रहा है। जबकि, सिर्फ दमन और शोषण ही समाज का यथार्थ नहीं है! समाज के यथार्थ में खुशी और गम दोनों शामिल होते हैं। फकत गम को ही समाज का यथार्थ या समानांतर सिनेमा का सच नहीं माना जा सकता। यदि समाज के यथार्थ में जीवन के सभी पक्षों को शामिल किया जाए, तो इसे समानांतर नहीं यथार्थवादी सिनेमा कहना ज्यादा उचित होगा। यदि इसमें 'अंकुर' शामिल है, तो 'हम साथ साथ है' को भी शामिल किया जा सकता है। समझा जाता है कि हमारा समानांतर सिनेमा इटैलियन न्यू रियलिज्म, फ्रांस के फ्रेंच न्यू वेव और जापान के न्यू वेव सिनेमा से प्रभावित रहा। भारतीय सिनेमा में भी यथार्थवादी झलक बहुत पुरानी बात रही। ऐसी फिल्मों की नींव 1920 से 30 के दशक में ही पड़ गई थी। 1925 में बाबूराव पेंटर ने अपनी मूक फिल्म 'सावकारी पाश' बनाई, जिसमें वी शांताराम ने गरीब किसान का किरदार निभाया था। ये किसान अपनी जमीन एक साहूकार को देने के लिए मजबूर हो जाता है और गांव छोड़कर शहर में मिल मजदूर बन जाता है! इसे भारत की पहली समानांतर फिल्म माना जाता है। महिलाओं की दुर्दशा पर भी 1937 में बनी फिल्म 'दुनिया ना माने' भी ऐसी ही फिल्म थी। लेकिन, ये परंपरा तब आगे नहीं पढ़ सकी।

1940 से 1960 के दशक में समानांतर सिनेमा ने फिर करवट ली। इस दौर में उसे सत्यजीत रे, ऋत्विक घटक, बिमल राय, मृणाल सेन, ख्वाजा अहमद अब्बास, चेतन आनंद और वी शांताराम ने पल्लवित किया। इन फिल्मों पर साहित्य की गहरी छाप थी। चेतन आनंद ने 1946 में 'नीचा नगर' जैसी फिल्म बनाई, जिसे कॉन फिल्म फेस्टिवल में ग्रैंड प्राइज मिला था। इस परम्परा को ही बाद में श्याम बेनेगल, गोविंद निहलानी, अदूर गोपालकृष्णन तथा गिरीश कासरवल्ली ने बढ़ाया। ऐसे फिल्मकारों में एक गुरुदत्त भी थे, जिन्होंने कला और फार्मूला सिनेमा को जोड़ने का कमाल किया। उनकी फिल्म 'प्यासा' को हिंदी सिनेमा की कालजयी फिल्म माना जाता है। अमेरिका की 'टाइम' पत्रिका ने इसे 'ऑल टाइम बेस्ट 100 मूवी' में जगह दी है। लेकिन, कला फिल्मों से व्यावसायिक सफलता पाने में ऋषिकेश मुखर्जी की भी कोई बराबरी नहीं कर सकता। इस तरह की फिल्मों के दर्शकों का एक विशेष वर्ग होता है। दर्शकों का दायरा सीमित होने के कारण इन फिल्मों की व्यावसायिक सफलता संदिग्ध हमेशा ही मानी गई। लेकिन, कई कला फिल्में ऐसी हैं, जिन्हें बॉक्स ऑफिस पर अच्छी सफलता मिली।

आजादी के बाद 50 और 60 के दशक में सिनेमा दो

धाराओं में बंट गया। एक धारा में सामाजिक सरोकार के चिंतन को स्थान दिया गया। दूसरी धारा में मुख्य तौर पर मनोरंजन प्रधान सिनेमा बढ़ा! इसे मुख्यधारा का सिनेमा कहा गया। दूसरी तरफ कुछ ऐसे फिल्मकार थे, जो जिंदगी के यथार्थ को अपनी फिल्मों का विषय बनाते रहे. दर्शकों ने समानांतर सिनेमा को व्यावसायिक सिनेमा से इतर हटकर एक नए विकल्प के रूप में देखा। बांग्ला फिल्मों में इसे बढ़ने में सत्यजित रे की खासी भूमिका रही, जो विश्व सिनेमा से प्रभावित हुए। 'पथेर पांचाली' (1955) से सत्यजीत रे ने यथार्थवादी फिल्मों का ये सिलसिला शुरू किया। इस फिल्म की पूरी पटकथा कभी नहीं लिखी गई। कागज पर सत्यजित राय कुछ नोट लिखते थे और स्केच बनाते थे।

हिंदी में समानांतर सिनेमा की नई शुरुआत 1969 में मृणाल सेन की फिल्म 'भुवन सोम' को माना जाता है। 1976 में मृणाल ने 'मृगया' बनाई, जो मिथुन चक्रवर्ती की पहली फिल्म थी। इसमें मिथुन ने एक आदिवासी क्रांतिकारी का किरदार निभाया था, जो पत्नी के यौन शोषण के खिलाफ आवाज उठाता है। बाद में सत्यजीत रे ने हिंदी में पहले 'शतरंज के खिलाड़ी' और बाद में 'सद्गति' बनाई। सत्यजीत रे के फ़िल्मी कथ्य में एक अलग ही शिल्प होता था। सुंदर छायांकन, विलक्षण दृष्टि बोध और दृश्य संयोजन के मामले में तो वे सदैव अनन्य रहे। 1953 में आई बिमल रॉय की 'दो बीघा जमीन' ने समीक्षकों की प्रशंसा के साथ व्यावसायिक सफलता भी प्राप्त की थी। इसे कॉन फेस्टिवल (1954) में भी अंतर्राष्ट्रीय सम्मान भी मिला। इसके बाद बिमल रॉय ने बिराज बहू, देवदास, सुजाता और 'बंदिनी' फिल्में बनाई। 1970 और 1980 के दौरान समानांतर सिनेमा ने जमकर विकास किया। श्याम बेनेगल शैली के फिल्मकारों का हौसला बुलंद हुआ! इसी दौर में शबाना आजमी, स्मिता पाटिल, रेहाना सुल्तान, साधु मैहर, अमोल पालेकर, ओम पुरी, नसीरुद्दीन शाह, अनुपम खेर, कुलभूषण खरबंदा, पंकज कपूर, गिरीश कर्नाड के साथ समय-समय पर रेखा और हेमा मालिनी का भी सानिध्य मिला।

श्याम बेनेगल समानांतर सिनेमा के नवसृजन के प्रमुख हस्ताक्षर बने। उन्होंने 1973 में पहली फिल्म 'अंकुर' बनाई। गांवों में शहरी घुसपैठ के परिणामों पर बनी यह फिल्म सफल रही। 'अंकुर' ने तीन राष्ट्रीय समेत 42 अवॉर्ड जीते। 1975 में बेनेगल ने 'निशांत' और 1976 में 'मंथन' बनाई। 'मंथन' को भी राष्ट्रीय पुरस्कार नवाजा गया। उनकी मंडी, कलियुग और 'जुनून' भी बेहद चर्चित रही। श्याम बेनेगल के साथ जुड़े गोविंद निहलानी भी इसी रास्ते पर आगे बढे और ऐसी ही यथार्थवादी फिल्में बनाई। निहलानी की 1981 में आई 'आक्रोश' को दर्शकों के साथ समीक्षकों ने भी सराहा। बाद में निहलानी ने कला और फार्मूला कथानकों पर फ़िल्में बनाना शुरू किया। पुलिस की विवशता पर अर्धसत्य, वायुसेना पर विजेता, मिल मालिक और मजदूरों के आपसी संघर्ष पर आघात, समाज के नवधनाढ्य वर्ग के खोखलेपन पर 'पार्टी' और आतंकवाद पर 'द्रोहकाल' बनाई। 1980 में मणि कौल ने गजानन माधव मुक्तिबोध की रचना पर 'सतह से उठता आदमी' का निर्माण किया। 1983 में कुंदन शाह ने कालजयी फिल्म 'जाने भी दो यारों' बनाई। 1984 में सईद अख्तर मिर्जा ने 'मोहन जोशी हाजिर हो' और 'अलबर्ट पिंटो को गुस्सा क्यों आता है' बनाकर नए रास्ते खोले। 1986 में केतन मेहता ने स्मिता पाटिल को लेकर 'मिर्च मसाला' बनाई।

1990 के शुरुआती दौर में निर्माण लागत बढ़ने का सबसे बड़ा प्रभाव समानांतर फिल्मों पर पड़ा और ऐसी फिल्मों का बनना लगभग बंद हो गया। फिल्मकारों ने समानांतर सिनेमा से मुंह मोड़ लिया। शबाना आजमी, स्मिता पाटिल, नसीरुद्दीन शाह और कुलभूषण खरबंदा जैसे कला फिल्मों से उपजे कलाकारों ने भी अपने रास्ते बदल लिए। लेकिन, 2000 के बाद फिर यथार्थवादी सिनेमा के घोड़े बदले अंदाज में परदे पर दौड़े। इस दौर में प्रायोगिक फिल्मों के नाम से नए प्रयोग हुए। मणिरत्नम ने 'दिल से' और 'युवा' बनाई तो नागेश कुकनूर ने 'तीन दीवारें' और डोर परदे पर उतारी। सुधीर मिश्रा की हजारों ख्वाहिशें ऐसी, जानू बरूआ की मैने गाँधी को नहीं मारा, नंदिता दास की फिराक, ओनिर की 'माय ब्रदर निखिल' और 'बस एक पल' ने माहौल बदलना शुरू किया। इसके बाद अनुराग कश्यप ने 'देव डी' और 'गुलाल' पीयूष झा की 'सिकंदर' के बाद विक्रमादित्य मोटवानी की 'उड़ान' ने नई धारा को जन्म दिया। लेकिन, अब यथार्थ दिखाने वाला यह सिनेमा कुछ सालों से गायब सा हो गया! ऐसा क्यों हुआ इसका एक ही कारण माना जा सकता है कि अब ये मनोरंजन नहीं रहा!

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

'ऑपरेशन सिंदूर' फिल्म की घोषणा, पोस्टर रिलीज

निकी विक्की भगनानी फिल्म्स ने द कटेंट इंजीनियर के साथ मिलकर ऑफिशियली तौर पर 'ऑपरेशन सिंदूर' नाम की एक नई फिल्म की घोषणा की। इसके साथ ही एक पोस्टर भी शेयर किया गया, जिसमें एक महिला सैनिक पीठ के बल एक आकर्षक छवि में खड़ी नजर आ रही है। उसे वर्दी में दिखाया गया है। उसके हाथ में राइफल है, जबकि वह अपने बालों में सिंदूर लगाती दिख रही है। बैकग्राउंड में टैंक, कांटेदार तार और ऊपर से उड़ते लड़ाकू जेट जैसे सीन देखे जा सकते हैं, जो बहादुरी, बलिदान और राष्ट्रवाद के विषयों को पुष्ट करते हैं।

'ऑपरेशन सिंदूर' शीर्षक बोल्ड तरीके से दिखाया गया, जिसमें सिंदूर में दूसरे 'ओ' की जगह सिंदूर का धब्बा है। तिरंगे में 'भारत माता की जय' वाक्यांश पोस्टर के देशभक्ति के लहजे को और बढ़ाता है। यह प्रोजेक्ट पहलगाम आतंकी हमले के लिए भारत की त्वरित और रणनीतिक रिएक्शन से प्रेरित है। यह फिल्म भारतीय सशस्त्र बलों के इसी नाम के

वास्तविक जीवन के ऑपरेशन पर आधारित है, जिसे 6 और 7 मई की मध्यरात्रि को अंजाम दिया गया।

इस मिशन ने पाकिस्तान और पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में स्थित नौ आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया और कई आतंकवादियों को मार गिराया था। ऑपरेशन का शीर्षक, सिंदूर, प्रतीकात्मक महत्व रखता है. हिंदू परंपरा में, सिंदूर (सिंदूर) विवाह का एक पवित्र प्रतीक है, जिसे आमतौर पर महिलाएं बालों के बीच में या युद्ध में जाने से पहले योद्धाओं द्वारा तिलक के रूप में लगाती हैं।

फिल्म का शीर्षक सिंदूर 22 अप्रैल को पहलगाम हमले की परेशान करने वाली प्रकृति का संदर्भ देता, जिसके दौरान आतंकवादियों ने विशेष रूप से पुरुषों को उनकी धार्मिक पहचान के आधार पर निशाना बनाया, जिनमें से कुछ नवविवाहित भी थे. फिल्म के कलाकारों की घोषणा अभी बाकी है। इस प्रोजेक्ट का निर्देशन उत्तम माहेश्वरी करेंगे।

निकी और विक्की भगनानी ने इससे पहले सोनाक्षी सिन्हा अभिनीत मनोवैज्ञानिक थ्रिलर निकिता रॉय का निर्माण किया था, जो 30 मई को दुनिया भर में रिलीज होने वाली है। कुश एस सिन्हा द्वारा निर्देशित यह फिल्म रहस्यवाद और मनोवैज्ञानिक तनाव पर आधारित है, जिसमें अर्जुन रामपाल, परेश रावल और सुहैल नैयर प्रमुख भूमिकाओं में हैं।

बढ़ते तनाव की वजह से कई इवेंट प्रभावित

सीमा पर बढ़ते तनाव का असर भारतीय एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री पर भी पड़ रहा है। कई सेलिब्रिटीज ने अपने शोज रद्द कर दिए। सिंगर श्रेया घोषाल ने भी अपना मुंबई कॉन्सर्ट पोस्टपोन करने की जानकारी दी। उन्होंने कहा कि वह इस वक्त देश के साथ एकजुट हैं। उनका 10 मई को मुंबई में कॉन्सर्ट होने वाला था, पर मौजूदा हालातों को देखते हुए श्रेया ने यह फैसला किया है। सिंगर ने इसकी जानकारी सोशल मीडिया के जरिए दी। हाल ही सिंगर अरिजीत सिंह ने भी अपना चेन्नई कॉन्सर्ट रद्द कर दिया था। उन्होंने अपना अबू धाबी वाला कॉन्सर्ट भी पोस्टपोन कर दिया।

भारत और पाकिस्तान के बीच जंग के हालात बने हुए हैं। तनाव लगातार बढ़ता जा

रहा है। पाकिस्तान की ओर से लगातार भारत के रिहायशी इलाकों पर ड्रोन हमले हो रहे हैं, जिनका उसे मुंहतोड़ जवाब भी दिया जा रहा। इसका असर भारतीय एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री पर भी पड़ रहा है। जहां कई शोज कैंसिल कर दिए गए हैं, वहीं ओटीटी प्लेटफॉर्म के लिए भी सरकार ने एडवाइजरी जारी की है। इसी बीच कई सेलिब्रिटीज ने अपने शोज भी रद्द कर दिए हैं।

हाल ही कमल हासन ने भी अपनी अपकमिंग फिल्म 'ठग लाइफ' का ऑडियो लॉन्च इवेंट रद्द कर दिया और एक बयान में कहा कि देश पहले आता है, बाकी सब बाद में। और अब श्रेया घोषाल ने यह कदम उठाया है। हालांकि, उन्होंने कहा कि कॉन्सर्ट सिर्फ पोस्टपोन हुआ है, इसे कैंसिल नहीं किया गया है। अभी और भी कई इवेंट के रद्द होने की जानकारी सामने आने वाली है। इसका एक कारण यह भी है कि सरकार और प्रशासन ने ऐसे कार्यक्रमों के आयोजनों पर रोक लगा दी।

अशोक जोशी

समाज और सेना के साथ फिल्मों में भी मुस्लिम योगदान

पहलगाम हमले में जिस तरह आतंकवादियों ने पर्यटकों का धर्म पूछकर नरसंहार किया उसका उद्देश्य भारत में बुने गए हिन्दू मुस्लिम ताने बाने को कमजोर कर साम्प्रदायिक वैमनस्य फैलाना था जिसमें वह

नाकामयाब साबित हुए। इन दिनों जिस तरह से एक मुस्लिम सैन्य अधिकारी सोफिया कुरैशी ने भारतीय सेना के क्रियाकलापों को प्रेस और मीडिया के सामने रखकर दुनिया को दिखा दिया है कि भारत में मुस्लिमों को कितना महत्व दिया जाता है और समाज में उसका कितना योगदान है।

मुस्लिमों ने भारतीय समाज की रचना में ही नहीं साहित्य और सिनेमा में भी अपना भरपूर योगदान दिया जो आज भी जारी है। आज भी हिन्दी सिनेमा में खान की पहचान और योगदान किसी से छिपा नहीं है। मुस्लिम कलाकारों, लेखकों, संगीतकारों और गायकों ने सिने. कला के ऊंचे पायदान पर भी पहुंचाया। इन मुस्लिम कलाकारों ने सिनेमा के माध्यम से अभिनय, कला और गीत.संगीत की धरोहर को खूब चमकाया।

वैसे तो हिन्दी फिल्मों का आगाज हिन्दू पौराणिक फिल्म राजा हरिश्चंद्र से हुआ। लेकिन, इसके बाद हिंदी सिनेमा जगत पर मुस्लिम कलाकारों और फिल्मकारों का ही बोलबाला रहा है।1913 में आई पहली मूक फिल्म राजा हरिश्चंद्र के बाद का यह वो दौर था, जब लड़कियों के लिए फिल्मों में काम करना किसी भी सूरत में सम्मानजन नहीं माना जाता था। ऐसे में जुबैदा वह मुस्लिम बाल कलाकार रहीं, जिन्होंने कोहिनूर के जरिए 12 साल की उम्र में अपने फिल्मी सफर का आगाज किया। जुबैदा की दो बहनें सुल्ताना और शहजादी भी अभिनेत्रियां थीं। इसके साथ ही हिन्दी फिल्मों में मुस्लिमों का योगदान आरंभ हुआ जो निरंतर जारी है।

उस दौर में कलाकार तो मुस्लिम थे लेकिन उनके नाम हिंदी ही हुआ करते थे। हिन्दी फिल्मों के महानायक दिलीप कुमार का वास्तविक नाम मोहम्मद यूसुफ खान है। सिल्वर स्क्रीन की वीनस कहलाने वाली मधुबाला का असली नाम मुमताज जहां देहलवी था, तो ट्रेजडी क्वीन के नाम से जानी जाने वाली मीना कुमारी का वास्तविक नाम महजबीन था। नाम बदलकर आने करने वाली अभिनेत्रियों में श्यामा भी थीं और निम्मी भी। श्यामा का वास्तविक नाम खुर्शीद अख्तर था, तो निम्मी असल में नवाब बानो थीं। खलनायक के रूप में खौफ फैलाने वाले अजित का असल नाम हामिद अली ख़ान था। 'शोले' के

गब्बर सिंह कहलाने वाले अमजद खान के पिता जयंत भी अपने जमाने के मशहूर अभिनेता रहे। उनका वास्तविक नाम जकारिया खान था। शाह अब्बास खान ने संजय खान बनकर, तो सैय्यद इश्तियाक जाफरी ने जगदीप बनकर खूब नाम कमाया। जॉनी वॉकर असल में बदरुद्दीन जमालुद्दीन काजी थे। ठीक उसी तरह महाभारत जैसे सीरियल में फेमस हुए अर्जुन फिरोज खान हैं।

हिंदी सिनेमा का एक दौर वह भी था जब मनोरंजन के सबसे बड़े माध्यम सिनेमा को हेय दृष्टि से देखा जाता था और महिलाओं के लिए यह पेशा बिलकुल भी सम्मानजनक नहीं माना जाता था, मगर उस दौर में भी सामाजिक बेड़ियों को तोड़कर मुस्लिम अदाकाराओं ने अपने सशक्त अभिनय से इस क्षेत्र में आने वाली अन्य लड़कियों के लिए भी राह आसान की। जुबैदा, मधुबाला और मीना कुमारी के अलावा नरगिस, सायरा बानो और सुरैया जैसी नायिकाओं ने न केवल कभी न भुलाया जाने वाला इतिहास लिखा, बल्कि अभिनय की नई इबारत भी लिखी।

हिन्दी फिल्मों के शुरूआती दौर से लेकर अब तक निगार, नाज, मीनू मुमताज, वहीदा रहमान, सइदा खान,मुमताज, फरीदा जलाल, जरीना वहाब, जाहिदा, जाहिरा,रीना राय, नाजनीन, जीनत अमान, परवीन बॉबी, शबाना आजमी, फराह

खान, तब्बू, कैटरीना कैफ, सोहा अली खान, सारा अली खान, हुमा कुरैशी, नरगिस फाखरी, सना खान, जायरा वसीम जैसी अभिनेत्रियां निरंतर फिल्म जगत में अपनी मजबूत दावेदारी के साथ मनोरंजन की दुनिया में छाई हुई हैं।

यदि नायकों की बात की जाए तो यह क्षेत्र भी खान पर खास मेहरबान रहा है। दिलीप कुमार के साथ साथ फिरोज खान, संजय खान और अमजद खान का भी अपना एक दौर रहा, मगर आमिर.सलमान.शाहरुख जैसी खान तिकड़ी ने सबसे लंबी पारी खेली है। मगर इस मामले में सैफ अली खान भी कमतर साबित नहीं हुए। इरफान खान, अरबाज, अयूब, सोहेल, फरदीन, इमरान, कादर, शहबाज, तारिक, जायद और जुबेर खान ने भी अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज करवाई। खान के अलावा नवाजुद्दीन सिद्दीकी और इमरान हाशमी जैसे कलाकारां ने भी अपनी सशक्त उपस्थिति पर्दे पर दर्ज की है।

बात केवल अभिनय तक ही सीमित नहीं रही। मुस्लिम निर्देशक, गायक, गीतकार, संगीतकार सभी ने सिनेमा को अपनी कला से सींचा। महबूब खान जैसे निर्देशक ने औरत और मदर इंडिया जैसी फिल्में निर्देशित कर कीर्तिमान स्थापित किया। मुगले आजम के निर्देशक के आसिफ थे। हालांकि उससे पहले अब्दुल राशिद कारदार ने 1931 में आवारा रक्स और फरेबी डाकू जैसे बोलती फिल्मों के निर्देशन के माध्यम से निर्देशन का आगाज कर लिया था। आगे चलकर जब्बार पटेल ने समानांतर सिनेमा की राह गढ़ी तो नासिर हुसैन ने हिन्दी फिल्मों को रोमांटिक बनाया। अजीज मिर्जा, कबीर खान, फराह खान, हबीब फैजल, इम्तियाज अली, मंसूर खान, अनीस बज्मी, अब्बास.मस्तान, साजिद.फरहाद शब्बीर खान, अली अब्बास जफर, शाद अली, जोया अख्तर, रोहन अब्बास, मुदस्सर अजीज ने हिंदी फिल्मों को अपने निर्देशन से नया अंदाज दिया है। ऐसे में सलीम खान ने जावेद अख्तर को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता जिन्होने हिंदी सिनेमा में लेखकों को प्रतिष्ठा और पैसा दोनों दिलाया।

साहिर लुधियानवी, शकील बदायुनी ,मजरूह सुलतान पुरी, असद भोपाली, कैफ़ी आज़मी जैसे अनेक गीतकारों ने कालजयी गीत लिखे तो सज्जाद और नौशाद ने फिल्मी संगीत को लोकप्रियता प्रदान की और ए आर रहमान ने भारतीय संगीत को ऑस्कर तक पहुंचाया। साजिद.वाजिद, इस्माइल दरबार, सलीम.सुलेमान ने संगीत को अलग रंग दिए तो मोहम्मद रफी, शमशाद बेगम, सुरैया, तलत महमूद ने श्रोताओं को झूमने को मजबूर किया। हमारे फिल्मी जगत के इन मुस्लिम फनकारों ने दुनिया को संदेश दिया है कि भारत में हिन्दू मुस्लिम एकता का ताना बाना इतना मजबूत है जो कोई भी आतंकवादी कभी कमजोर नहीं कर सकता।

इस करवट चैन ना उस तरफ आराम...!

प्रकाश पुरोहित

मौ ''बस, डेढ़ साल बचा है नौकरी का!'' वे बता रहे थे। ''यहां बेटा और बेटी के साथ रहता हूं, क्योंकि मां नब्बे साल की है और यहां रखना ठीक नहीं, कहती हैं उनकी इच्छा है गांव में ही उनका अंतिम संस्कार हो। इसलिए पत्नी को भी उनके साथ वहां गांव में छोड़ रखा है। चार साल से इंतजार है! आप ही बताइए, ये भी कोई जिंदगी है उनकी। ना तो किसी को पहचानती हैं और ना ही कुछ याद रहता है, हां खाने की याद रहती है हरदम। फरमाइश करती रहती हैं और ना दो तो चिल्लाती हैं जोर-जोर से, आसपास वाले आ जाते हैं कि क्या हुआ। खाने को दो तो हजम नहीं होता। नब्बे साल की हो गई हैं और लगता नहीं कि जल्दी ही कुछ निपटारा होगा। तो मुंह धोकर, बैग उठाती है और काम पर निकल जाती है। हम देखते रहते हैं, क्या कर सकते हैं, कमा रहे हैं तो किसी की दबैलदारी भी नहीं है।

''हमने कभी रात को नौ बजे के बाद अन्न का दाना भी मुंह में नहीं रखा और ये, क्या कहते हैं उसे, जोमेटो, बस उस पर फोन से कुछ किया और घर बैठे खाने को हाजिर। ना जाने किन हाथों का बना, कैसा बना, कब का बना, ठूंस लेते हैं। ऐसा भी नहीं है कि दाल-रोटी खा रहे हों, मेगी, पिज्जा और मंचूरियन, ये तो इनका भोजन है, फिर बीमार पड़ते हैं और डॉक्टर और दवाई में रुपया फूंकते हैं। किसी काम का कोई समय तय नहीं। कुछ कहो तो सुनना पड़ता है- आपके जमाने में होता होगा, अब नया जमाना है। आपके समय तो बिजली भी नहीं थी और अब क्या नहीं है... ऐसी बातें सुनना पड़ती हैं। बर्दाश्त भी करना होता है कि मां तो वहां गांव में है और बच्चे भी चले गए तो क्या होगा। सबसे भली चुप। सोच-सोच कर भी आप क्या कर लेंगे, ये करेंगे तो वही, जो करना है।

वजन अलग बढ़ा लिया है कि पलंग से उतरती नहीं। हिलती-डुलती भी नहीं हैं। गांव की खेती और घर उनके ही नाम कर गए बाबूजी। छोड़ भी तो नहीं सकते ना किसी और के भरोसे!

''ये पुराने लोग अपना खूब ध्यान रखते हैं। सब काम समय से, जागना, खाना, सोना, जरा कसर हो जाए तो आसमान सिर पर उठा लेते हैं। हमारे पिताजी ही पूरे बानवे साल हो के गुजरे, लेकिन उनके साथ यह अच्छी बात थी कि चलते-फिरते रहे और हमें दुःख नहीं दिया। अम्मा तो दस साल से एक तरह से पलंग ही तोड़ रही हैं। वाइफ भी बेचारी तंग आ गई होगी, लेकिन उपाय क्या है। बस इंतजार है। घर और जमीन बेच कर यहीं आकर बस जाएंगे, क्योंकि अब गांव में तो कुछ बचा नहीं है रहने लायक। अपन तो फिर भी रह लें, लेकिन ये बच्चे तो उधर का मुंह भी नहीं करना चाहते। सच भी है, बचपन से अभी तक गांव सिर्फ गरमी की छुट्टियों में ही देखा है बच्चों ने। हमने तो सा'ब, चिमनी में पढ़ाई की है, और ये एक मिनट भी बगैर मोबाइल नहीं रहते। गांव जाएं तो कहते हैं, कभी लाइट नहीं तो कभी नेटवर्क नहीं मिल रहा। गांव में करें भी तो क्या बच्चे!

''देखिए साब, हम तो सुबह चार बजे उठने वालों में रहे। चाहे जैसा मौसम हो और चाहे जब सोए हों, चार बजे जाग ही जाते हैं। अब तो रिटायर होने वाले हैं, लेकिन जब नौकरी में भी नहीं लगे थे, तब भी चार बजे उठने का नियम था। हमारे बाबूजी तो लात मार कर उठा देते थे और आज के ये बच्चे, सच कहें साब, जब सुबह आठ-नौ बजे तक खूंटी तान कर सोते रहते हैं तो खून खौल जाता है, इच्छा तो यही होती है दो जमाए पिछवाड़े पर, उठा कर खड़ा कर दें, लेकिन अब पहले जैसा जमाना तो रहा नहीं। लड़का तो लड़का, लड़की भी कम नहीं है, कई बार ''हम सच्ची बता रहे हैं कि दोनों तरफ से हमारी तो पिटाई हुई है। हमारे बड़े-बूढ़े भी हमसे खुश नहीं थे और ये आज के बच्चे तो क्या ही खुश होंगे! हमें तो दोनों को संभालना पड़ा है और बर्दाश्त कर ही रहे हैं। मगर सा'ब चिंता भी तो होती है कि आजकल तो बीस-पच्चीस साल के बच्चे भी हार्ट अटैक से मरे जा रहे हैं। जब जीवन में संयम नहीं होगा, ढंग का खाना नहीं होगा तो सेहत कोई अमर बूटी तो खाकर आई नहीं है। हम चोइस घंटे की ड्यूटी के बाद भी ताजे रहते हैं, आज इस उम्र में, ये और ये आज के छोकरे जरा से में 'टें' बोल जाते हैं। अभी समझ नहीं आ रहा है, जब हमारी उम्र में आएंगे ना, तब पता चलेगा, शरीर ठीक होना कितना जरूरी है!

''आप से बात हुई तो इतना भी बोल लिए, वरना तो आज समय किसके पास है इतना भी सुनने के लिए। मन मिलने की बात है साहब। कई बार तो अपनों से ही नहीं मिलता। किससे कहें। बस, यही इच्छा है कि बाबूजी और अम्मा की जितनी उम्र हमें ना मिले और बस यूं ही चलते-फिरते आंख बंद हो जाए। अम्मा की हालत देख कर तो यही लगता है कि ऐसा जीवन भी किस काम का कि खुद तो कष्ट पा ही रही हैं और साथ वालों का भी जीना हराम हो रहा है। वह तो कहिए वाइफ गांव की है, ज्यादा पढ़ी-लिखी भी नहीं है तो वहां गांव में खट रही है। अगर आज की कोई मेमसाब हो तो मायके जाकर बैठ जाए। हमारी अपनी ही बिटिया साफ मना कर देती है, अगर कभी कहो कि दादी के पास रह आओ कुछ रोज तो इतने काम निकल आते हैं कि लगता है देश इनकी वजह से ही चल रहा है। हम तो रोज भगवान से यही मांगते हैं कि लंबी उम्र नहीं चाहिए, बस किसी की जिंदगी खराब नहीं करें और यूं ही आंख बंद हो जाए।' आंख बंद करते हुए बोले।

और क्या कह रही है जिंदगी

ममता तिवारी

लेखिका साहित्यकार हैं।

आज मदर्स डे के दिन फिर बच्चा बन जाओ

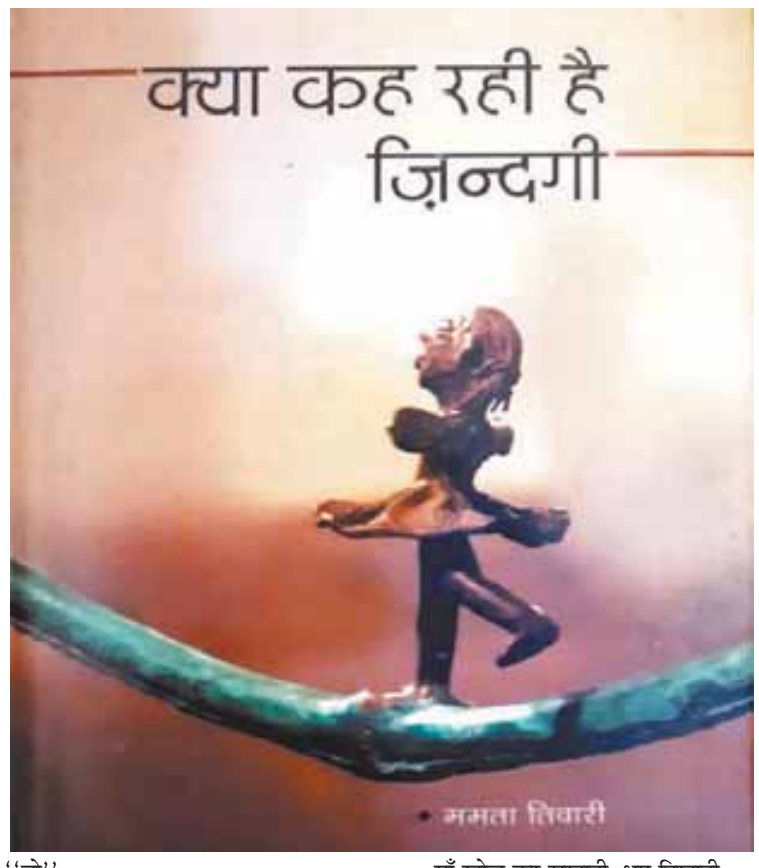

माँ उदास है। माँ पूछती है, चंद दीवारें खड़ी होने से क्या होता है? क्या रौशनदान से मुझे बुलाया नहीं जा सकता?

क्या आप के घर में एक ऐसी स्त्री है जिसने आप को जन्म दिया था पर आज आप उसका लालन पोषण कर रहे हैं। वो आपकी गंदगी साफ करती थी रातों को जगती थी, आज आप जग रहे हैं। वो स्त्री थोड़ी देर में आपको भूल जाती है, गेट खोलकर बाहर निकल जाती है। बहुत सवाल करती है। कभी ज़्यादा खाती है, कभी खाने को हाथ नहीं लगाती है। कभी गुस्सा करती है, कभी कई दिनों तक कुछ नहीं बोलती। मैं सारा सामान जमाती, उसकी अलमारी सजाती पर डॉक्टर के कागज़ पर वो लिखती है, ''मुझे कहीं जाना है।''

मैं सोचती थी मैं कितना भी करूँ (हालांकि उसके किये के आगे मेरा सब कम है) पर उसे भाई की याद सताती थी। उसे भाई के घर जाना है।

ज़िंदगी के प्लेटफार्म पर बैठी
औरत
पोटली लिये
डॉक्टर के पूछने पर हमेशा कहती है
उसे कहीं जाना है
पर रेल है, कि रूकती नहीं
मैं उसकी अलमारी सजाती,
कपड़े फिर जमाती,
वो सब सामान
फिर सहेज लेती थैलियों में
मैं डांटती,
तुम्हें आख़िर जाना कहां है?
टुकुर-टुकुर देखती
वो गठरी खोल देती
सुबह को वही वाक्या दोहराया जाता
मुझे अफसोस होता
मैं उसके लिये
कुछ कर नहीं पा रही,
रोज़ रात इक रेल
उसके दिल से गुज़रती है
और वो उसमें चढ़ नहीं पाती
भावनाओं की इस भागमभाग में
कहीं ऐसा ना हो, कि वक़्त से पहले
''वो''
गलत रेल में चढ़ जाये
और हम उसे गुमशुदा के कॉलम में भी
ना ढूंढ पायें।

माँ के पास हमारी अनमोल धरोहर रखी है बक्से में। नौस्टेल्जिया बार बार वहीं पहुँच जाता है। उनकी सिलाई मशीन, बक्से पे नज़र फेरती हूँ। फिर याद आती है जाड़े की वो दुपहर जब मैं छत पर माँ के साथ ऊनी कपड़े सुखाती थी।

जाड़ा आने से पहले
माँ, गरम कपड़ों का बक्सा खोलती
नैफ्थलीन की गोलियों की खुश्बू
पूरे घर में फैल जाती।
वो पुराने ओव्हरकोट, चेस्टर्स, मफलर
तमाम छेद वाली शालें
माँ खोल कर सुखाती, धूप दिखाती
फिर सहेजती
मैं दौड़ कर उन पर उलट-पुलट हो जाती
मुझे उनमें से माँ की महक आती
अब मैं भी गर्म कपड़ों को धूप दिखाती हूँ
ड्रायक्लीन को भिजवाती हूँ
पर एक ही साल में कपड़े बदरंग हो जाते
अजीब से महकते
मैं उन्हें अलग कर देती हूँ।

काश! माँ की खुश्बू की कोई गोलियां मिलती

जिन्हें मैं ज़िंदगी में डालकर निश्चिंत हो जाती

और महकती गहरी नींद में सो जाती।

अफसोस करने को कुछ मत छोड़ना, कि माँ की बेकदरी का अफसोस बाद में बहुत पीड़ा देता है कितना भी करो लोगों की सेवा, पर उनकी सेवा ना कर पाने का दंश बहुत चुभता है। उसे तुम्हारी अथाह संपत्ति, ऐशो आराम से कोई लेना देना नहीं वो बस तुम्हारा वक़्त चाहती है जो तुम्हारे पास है नहीं सो वक़्त निकालो, बाद में अनाथ आश्रमों, अस्पतालों में लोगो को वक्त देते नज़र आओगे।

इक दिन हमारी मां की तस्वीर भी
अखबार में छप जायेगी
तब हमें उसकी इक-इक बात
याद आयेगी, कि
जब वो घूमना चाहती थी पहाड़ों पे
तब हम छोटे थे, ठंड लगने का डर था।
जब वो देखना चाहती थी समंदर
तब हमारे इम्तिहान थे,
फेल हो जाने का डर था।
जब वो जाना चाहती थी,
अपनी मां से मिलने
तब हमारी फीस जमा होनी थी,
नाम कट जाने का डर था।
जब वो जाना चाहती थी तीरथ पे
तब हमारे बच्चों को
हिल स्टेशन जाना था
उनके दिल टूटने का डर था।
आज जब बैंक बैलेंस है हमारे पास
तो वक़्त का खाता कमज़ोर है
और मां के घुटने का सिसकता शोर है,
क्यों ना जो देखा था सारा जहाँ
उसकी आंखों से
आज उन्हीं आंखों को दुनिया दिखायें
थोड़ा मसरूफ़ियत से निकलें,
उसके तस्वीर बनने से पहले
उसे साथ ले कहीं सैर को निकल जायें।

... आज फिर मदर्स डे के दिन बच्चा बन जाओ और अपना मनपसंद खाना उससे बनवाओ, वो खुश हो जायेगी, आशीर्वाद बरसायेगी। माँएं ना रूठती है ना भूलती हैं। बस, तुम्हारी बेरूखी और आत्मकेंद्रित होने से उदास हो जाती है। रोज पूछते रहो बस इतना ही और क्या कह रही है ज़िंदगी...? सारी ज़िंदगी वो माँ बनी रहती है तुम ही भूल जाते हो, बच्चे बनना।

आत्मा सो परमात्मा

जीव दया

मालवा में कुत्ते को बिना झोली का साधु कहा जाता है। पुराने जमाने से अपने भोजन में से एक रोटी गाय और एक रोटी कुत्ते के लिए रखने का प्रावधान रहा है। कुत्ता दुनिया का सबसे पहला पालतू पशु है जिसे मनुष्य ने अपने स्वार्थ हेतु पालतू बनाया। धीरे धीरे इन पालतू पशुओं की संख्या बढ़ने लगी तथा ये मानव समाज का हिस्सा बनते गये।

मनुष्य की तरह प्राचीन काल से कुछ पशुओं को सामाजिक आरक्षण प्राप्त रहा जिसमें गाय सबसे प्रमुख है। दूध और कृषि क्षेत्र की उपयोगिता ने गाय को यह दर्जा दिया होगा औद्योगीकरण ने कृषि यंत्रों के बढ़ावे से गाय का महत्व कृषि क्षेत्र से खारिज होता गया किन्तु, राजनीतिज्ञों, शास्त्रों, साधुओं और कथावाचकों ने इसे शाब्दिक रुप में कायम रखा तथा गौ माता का खूब दोहन किया।

पिछले कुछ दशकों में वृध्दाश्रम की तरह गौशालाएं भी पनपीं बजट मिलने लगा जमीनें घेरी गयीं, अतिक्रमण किया गया पर गायों की क्या हालत है किसी से छिपी नहीं। सड़कों सब्जी मंडियों, गलियों में दुग्ध दोहन करके छोड़ी गयी गायें,हर जगह हर स्थान पर भटकती रहीं और श्रद्धा के नाम पर पोषित भी हुईं।इस सारी प्रक्रिया में सबसे ज्यादा जिस पशु की उपेक्षा हुई है वह है कुत्ता। मैंने लोगों को गाय को रोटी खिलाते वक्त डंडा लिए कुत्ते को दुत्कारते देखा है। गाय जिसका मालिक भी है,घास सब्जी, अपशिष्ट खाने का विकल्प भी है, लेकिन कुत्ते का कोई मालिक नहीं उसके लिए सामिष अपशिष्ट भी नहीं।कितना दुखद होता है किसी का भूखे पेट सोना।

जैसे तैसे ये चल ही रहा था एक कथावाचक संत आये गौभक्ति की प्रेरणा दी तथा एक गौ ग्रास वाहन की शुरुआत हो गयी जो गली गली से रोटी भोजन, सब्जी और अपशिष्ट संग्रहित करने लगा जिससे मौहल्ले में घूमने वाली गायें तथा कुत्ते घर घर से मिलने वाले आहार से वंचित हो गए तथा भोजन गौशाला जाने लगा जिसका पृथक बजट आता है। यदि यह संग्रहण गौशाला ले जाना है तो मौहल्ले की गायों को भी वहीं छोड़ देना चाहिए। और पशु गणना के साथ गाय तथा उसके मालिक का उल्लेख हो और उसका मोबाइल नंबर गाय पर अंकित किया जाये ताकि उसपर कार्यवाही हो सके।कोई भी योजना बनाते समय उसके हर पक्ष को देखना जरुरी है। मैं हमेशा कोशिश करता हूं कि कोई कुत्ता निराश न जाये।

आलेख एवं फोटो- बंसीलाल परमार

'क्यों'... जवाब हम देंगे!

❐ यूके से
प्रज्ञा मिश्रा

इ भारत और पाकिस्तान सीमा पर तनाव बढ़ रहा है। ईंट का जवाब पत्थर से देने की भाषा इस्तेमाल की जा रही है। ऐसे में फिल्म **'वारफेयर'** की बात जरूरी है। फिल्म अमेरिका के इराक पर हमले के दौरान 11 नवम्बर 2006 की घटना पर है। यह फिल्म शायद इसलिए और भी ज्यादा असरदार है कि तीन बरस पहले शुरू रूस-यूक्रेन और इजराइल-फलस्तीन युद्ध थमने का कोई संकेत नहीं है। नेवी सील्स के कुछ सैनिक इराकी घर में दाखिल होते हैं और कब्जा कर लेते हैं, लेकिन उसके बाद जो धमाका होता है, हकीकत जैसा ही है। परदे और हकीकत में बम ब्लास्ट देखने की तुलना नहीं की जा सकती, लेकिन फिल्म **'वॉरफेयर'** युद्ध से पैदा होने वाला डर, खौफ और जीने की ललक को सामने लाती है। बहुत ही भावुक आवाज और तनाव भरे माहौल में बन है, जहां मजाक, बैकग्राउंड स्टोरी के लिए जगह नहीं है। पूरी तरह से बयानों पर है, जो इस दौरान अमेरिकी सेना का हिस्सा थे और उनकी कहानियों, बातों को जोड़ कर स्क्रिप्ट लिखी है। इराकी किरदारों को परदे पर ज्यादा समय नहीं मिला, लेकिन जितने भी वक्त रहे, पलक भी नहीं झपकती। यह अपने ही घर में अमेरिकी सेना के सामने एक तरह से हाउस अरेस्ट हो चुके हैं, भले ही सेना कितना ही कह ले कि डरो मत, कुछ नहीं होगा,

लेकिन उस आवाज, आंखों को यकीन नहीं है। इन्हें बंदूक की नोक पर अपने ही घर में बंधक बना लिया है, घर तहस-नहस कर दिया है। इनके घर से इलाके पर नजर रखी जा सकती है।

'वॉर फेयर' कई सवाल उठाती है। युद्ध से बर्बादी और विनाश का क्या हासिल है? यह कितना बेमतलब है और क्या वाकई किसी भी मसले को इस तरीके से सुलझाया जा सकता है, जिसने खुद ढेरों नए मसले खड़े कर दिए हों? अंत में इराकी महिला खून से सने- उजड़े घर को छोड़ते सैनिक के पास जाकर 'क्यों' पूछती है तो कोई जवाब नहीं आता। न उस सैनिक के पास कोई जवाब था और न ही फिल्म जवाब देने की कोशिश करती है। वॉर युद्ध को इतने नजदीक से देखने के बाद भी अगर युद्ध का साथ दिया जा रहा है तो अपने अंदर झांककर देखने की जरूरत है।